दश्त-ए-माज़ी

ग़ज़ल
संग्रह

डॉ. कुँवर
वीरेन्द्र विक्रम
सिंह गौतम

दश्त-ए-माज़ी

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

दश्त-ए-माज़ी (ग़ज़ल संग्रह)

[ई-पुस्तक]

प्रथम संस्करण: मई 2023

निवेदन

ई-पुस्तक के रूप में तैयार ग़ज़लों का यह नवाँ संकलन ग़ज़ल के आशिक़ों को समर्पित है। इस संग्रह की 110 ग़ज़लें इसी माह (मई 2023) में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह हिरासत से (ई-पुस्तक) की 110 ग़ज़लों के बाद की हैं। ग़ज़लों के आकलन का काम ग़ज़ल के आशिक़ों का है।

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम
बी-607, सत्या एन्क्लेव, लेक एवेन्यू, कांके रोड, राँची – 834 008

दिनांक: 15 मई 2023

अनुक्रम

ग़ज़लक्रमांक

बस यूँही बेसबब उदास रहे
सदा-ए-वक़्त वक़्त पर सुनते
पलट के देखा है जाते जाते
ज़ेहन-ओ-दिल हाथ से जाते रहे
आज रोज़-ए-ईद है, रोज़-ए-सईद है

ख़ुद अपने वास्ते अब एक मसअला हैं हम
दश्त-ए-माज़ी में भटक जाता
इरादा सब्र आज़माना है
शाम होते ही काँप जाते हैं
नया क्या है वही सब है पुराना
अपने ही अक्स से नाराज़ हुए
शजर बे-बर्ग हैं, बे-सरसराहट
पाँव में छाले लिए बैठे हैं
टोकते हैं तो बौखलाते हैं
मैं जैसा सोचता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो
अदब-पसंद थे बा-होश रहे
दौर-ए-गुफ़्तगू जब एब-जू पे आएगा
मिले अगर तो दिखे जल्दी में
इतनी तारीफ़ के बांधे गए पुल
घर के जलने पे गर देता हवा सगा होगा
या-ख़ुदा याद किया है किसने
ख़्वाब ना देते इन आँखों में किर्चियाँ देते
बात बे-वजह किसलिए करते
डराया शेख़ ने फिर ज़िक्र-ए-क़यामत से
इलाज शब के अँधेरे का कुछ किया जाए
ज़बाँ के साथ अगर दिल भी साफ़ रखते तो
दर्द-ए-दिल नहीं समझता संग-दिल है जो
चंद आए हैं हरम से, चंद हैं बुत-ख़ाने से

यही हर रात की अब है कहानी
क्यों कहें रहगुज़र मालूम नहीं
मिलने आ जाता है वो शोख़ के हवाले से
शाद किसने किया ख़ुदा जाने
नहीं कुछ काम की अस्ती हमारी
सबने हँसने की वजह पूछी है
अज़ल से ये सफ़र मुसलसल है
अगर आप कह दें, नफ़स छोड़ दें हम
हादसा अपने को दोहराएगा
क़ैद की मीआ'द से ग़ाफ़िल रहे
सभी से हँस के मिल लिया करते
ख़्वाब गर अच्छे या बुरे होते
ढूँढता आब कौन है बे-तलब

रू हक़ीक़त बयाँ नहीं करता
भूली-बिसरी हुई कहानी कहते हैं
रात भर बदलते रहे करवट
सफ़र शब का है मुसीबत वाला
सुकूत-ए-शाम जाँ पे भारी है
संग हाथों में उठाए बढ़े मेरी जानिब
जहाँ मिले बहस-आमादा मिले
नहीं पलट के फिर अगर देखा
हवा के सामने चराग़ मेरा
सवाल दर सवाल क्या करते

लब-ए-दरिया खड़े रहे बेकल
ख़्वाब था रात भर सबने देखा
ये ज़िंदगी का सफ़र भी कितना अजीब है
यूँही हर सम्त नज़र दौड़ाई
बात मेरी कभी नहीं करते
याद वो आए तो आफ़त आई
लोगों के मशवरे सुनें या दिल के मशवरे
ज़बाँ पे लफ़्ज़-ए-सदाक़त है
ख़ुश-नुमा ख़्वाब भींच लेते हैं
भटक रहे हैं क्या ख़ुद को तलाश पाएंगे
बात करने से किसी को भी है गुरेज़ नहीं
फिर जाते जाते यार ने देखा है घूम कर
तमाम शब दहर को रोते रहे
लम्हे गिन-गिन के दिन गुज़ारे गए
रफ़्ता रफ़्ता उम्र घटती जा रही
जानते-बूझते चुप-चाप रहे
ज़रख़ेज़ ज़मीं हो तो फिर सब्ज़े भी खिलेंगे
किसी के साथ हमारा मिज़ाज मिलता नहीं
है सख़्त एतिराज़ सभी को सवाल पर

ग़ज़लें

अन्य ग़ज़ल संग्रह

1. सुकून-ए-ख़ातिर
2. दौर-ए-सितम
3. बयान-ए-दर्द
4. मील के पत्थर
5. नग़मा-ए-बुलबुल
6. साहिल से
7. यदा-कदा
8. हिरासत से

1: सुकूत-ए-शब का हिस्सा हो गया हूँ

सुकूत-ए-शब[1] का हिस्सा हो गया हूँ,
मैं एक भूला-सा क़िस्सा हो गया हूँ।
[1]रात की नीरवता

ज़रूरत किसलिए होगी किसी की,
मैं ख़ुद ही नाला-फ़र्सा[2] हो गया हूँ।
[2]मातम करने वाला

हमारे सर तलक आते हैं पत्थर,
मैं क्या मजनूँ का विर्सा[3] हो गया हूँ।
[3]वारिस

मनाने की करी पुर-ज़ोर कोशिश,
मैं थक कर आज ग़ुस्सा हो गया हूँ।

ज़ेहन और दिल बराबर खींचते हैं,
मैं इनके बीच रस्सा हो गया हूँ।

चले आते हैं हमको देखने सब,
तमाशा हूँ या जल्सा हो गया हूँ।

जहाँ ठहरा वहीं ठहरा हूँ 'गौतम',
नहीं गुज़रा वो अर्सा[4] हो गया हूँ।
[4]समय

2: चश्म बे-ख़्वाब नहीं होते हैं

चश्म बे-ख़्वाब नहीं होते हैं,
हम नहीं गहरी नींद सोते हैं।

सहर के साथ ख़्वाब टूटेगा,
आँख बेकार ही भिगोते हैं।

लूटता कोई नहीं वो गौहर[1],
पलक पे आप जिसे ढोते हैं।
[1]मोती (अश्रु)

इश्क़ की आरज़ू में रोते थे,
इश्क़ होने पे रोते-धोते हैं।

इश्क़ आज़ार[2] है हो जाए तो,
चैन से लोग हाथ धोते हैं।
[2]रोग

बैठकर हाथ मल रहे हैं वो
हाथ से जिनके उड़े तोते हैं।

नाख़ुदा[3] पर नहीं भरोसा है,
सफ़ीना[4] ख़ुद ही वो डुबोते हैं।
[3]मांझी [4]नाव

लोग क्यों मानते नहीं 'गौतम',
काटते वो हैं जिसे बोते हैं।

3: वक़्त के हाथ में ही बख़्त रहा

वक़्त के हाथ में ही बख़्त[1] रहा,
दहर में कौन पा-ए-बख़्त[2] रहा।
[1]भाग्य [2]भाग्य की बुनियाद

वक़्त जब भी बदलता है करवट,
ख़ाक में मिलता शाह-बख़्त[3] रहा।
[3]किस्मत का धनी

अदू के साथ जिसके यार हुए,
कैसा बे-बख़्त[4] वो कम्बख़्त[5] रहा।
[4]भाग्यहीन [5]अभागा

सफ़र सभी का ख़ुशगवार हुआ,
हर क़दम साया-ए-दरख़्त रहा।

लोग सिल कर ज़बान बैठे रहे,
फ़ैसला जो भी लिया सख़्त रहा।

जिसका लोगों ने इंतिख़ाब किया,
उसी के पास ताज-ओ-तख़्त रहा।

कद-ओ-काविश[6] तमाम की 'गौतम',
ख़िलाफ़ तेरे वा-ए-बख़्त[7] रहा।
[6]प्रयत्न [7]हाय तकदीर

4: ख़्वाब को ख़्वाब ही माना जाए

ख़्वाब को ख़्वाब ही माना जाए,
अश्क को आब ही माना जाए।

शोख़ चाहे हो मेहर-ताब[1] बना,
उसको महताब[2] ही माना जाए।
[1]सूरज *(आग बबूला)* [2]चाँद

मेरी ख़ामोशी को मजबूरी नहीं,
अदब-आदाब ही माना जाए।

शजर पे एक भी पत्ता है तो,
उसको शादाब ही माना जाए।

मस्त-आँखों में डूब जाए तो,
तह-ए-गिर्दाब ही माना जाए।

नज़र उठा के देखना है मना,
पस-ए-नक़ाब ही माना जाए।

आशिक़ी का है तक़ाज़ा 'गौतम',
हुस्न नायाब ही माना जाए।

5: ठोकरें खा के पा संभलने लगा

ठोकरें खा के पा संभलने लगा,
रास्ता अपने से निकलने लगा।

टहलने वाले थक के बैठ गए,
बैठकर जो थका टहलने लगा।

वस्ल के मुंतज़िर थे ऊबे हुए,
एक वादे से दिल बहलने लगा।

दफ़्न करके नहीं सुकून मिला,
सामने मेरे और खुलने लगा।

गर्मी-ए-इश्क़ को हवा दी तो,
सर्द जो ख़ून था उबलने लगा।

कान में आई मौत की आहट,
दिल मेरा जीने को मचलने लगा।

जिससे उम्मीद लगाई 'गौतम',
मौसमों की तरह बदलने लगा।

6: जा-ब-जा उसको ही तलाश रहे

जा-ब-जा[1] उसको ही तलाश रहे,
यार जो मरकज़-ए-पुरख़ाश[2] रहे।
*1*हर जगह *2*विवाद का केंद्र

रहे आशिक़ वो कू-ए-जानाँ में,
दिल के जो मारे बे-मआश[3] रहे।
*3*बेकार

हिज्र का एहतिराम[4] अपनी जगह,
उसकी सूरत नज़र में काश रहे।
*4*सम्मान

चाँद से हमको भी मोहब्बत है,
सजा सितारों से आकाश रहे।

लोग सूरत से ख़ुश-फ़हम होंगे,
आरसी[5] करता फ़हम फ़ाश[6] रहे।
*5*दर्पण *6*फाड़ना *(दूर करना)*

गवाह मिलते हादसे के नहीं,
तमाश-बीन बहुत बाश[7] रहे।
*7*उपस्थित

मरीज़-ए-इश्क़ के लिए 'गौतम',
कुछ इंतिज़ाम-ए-इन्तेआश[8] रहे।
*8*बचने का प्रबंध

7: मामला था किया रफ़ा ख़ुद से

मामला था किया रफ़ा ख़ुद से,
आज देखा उसे ख़फ़ा ख़ुद से।

तमाशा-बीं को जुटाने के लिए,
ये तमाशा किया तुर्फ़ा[1] ख़ुद से।
[1]अजब

हुज़ूर से गिला-ए-ज़ौर[2] करें,
हमने पूछा कई दफ़ा ख़ुद से।
[2]अस्थिर विचार का उलाहना

याद उसको कराना ही होगा,
वादा करते नहीं ईफ़ा[3] ख़ुद से।
[3]पूरा

आईना उसके हाथ में दे दो,
करेंगे इश्क़ इक तरफ़ा ख़ुद से।

वो बे-नक़ाब हैं निकले घर से,
करें दीवाने अब दिफ़ा[4] ख़ुद से।
[4]सुरक्षा

समझ के करना था सौदा दिल का,
यहाँ होता नहीं नफ़ा ख़ुद से।

बे-रुख़ी देखकर उसकी 'गौतम',
बज़्म से हम हुए दफ़ा[5] ख़ुद से।
[5]भागना

8: रिंद के साथ क्यों हर्ज़ा-सराई करते हैं

रिंद के साथ क्यों हर्ज़ा-सराई[1] करते हैं,
चखे बिना ही मय ज़ाहिद बुराई करते हैं।
[1]व्यर्थ की बात

दिल मिलाते नहीं हैं आप कोई बात नहीं,
दिलों के बीच में क्यों पैदा खाई करते हैं।

साथ बैठे हैं अगर आज बे-नक़ाब रहें।
नाम के वास्ते क्यों मुँह-दिखाई करते हैं।

मुद्दा गर ज़ेर-ए-बहस है लिया संजीदा,
बात बे-वजह क्यों बे-सर-ओ-पाई करते हैं।

साथ जाते किसी सफ़र में नहीं हैं लेकिन,
शौक़ के तौर पर वो रहनुमाई करते हैं।

आदतन लोग बढ़ाते हैं बात को पहले,
और फिर बाद में सुल्ह-ओ-सफ़ाई करते हैं।

मैं तो हैरान हूँ कमाल-ए-मो'जिज़ाई[1] से,
सबको लगने लगा वो मसीहाई[2] करते हैं।
[1]चमत्कार [2]जिलाना

कूचा-ए-यार या हरम या दैर हो 'गौतम',
आश्ना आस्ताँ पर जबीं-जाई[3] करते हैं।
[3]मस्तक झुकाना

9: जो हो रहा है उससे कोई बे-ख़बर नहीं

जो हो रहा है उससे कोई बे-ख़बर नहीं,
लेकिन किसी बशर पे हो रहा असर नहीं।

दरिया को पार करने का दावा किया गया,
हमको मगर मिला कोई दामान-ए-तर[1] नहीं।
[1]गीला पांयचा

आगाह कर रहे हैं लौटकर जो आए हैं,
महफ़िल में बुलाए गए हैं बे-वक़्र[2] नहीं।
[2]हैसियत हीन

कुछ रो रहे हैं उनके पास खेत नहीं हैं,
कुछ खेत रो रहे हैं कोई फ़स्लगर[3] नहीं।
[3]किसान

कह पाए नहीं यार से हम दिल की बात को,
आए वो किसी रोज़ भी तन्हा नज़र नहीं।

अब हमसे उसने बात करना छोड़ दिया है,
हमने कहा था बोलिए अगर-मगर नहीं।

मायूस होके देखिए कहने लगा 'गौतम',
हालात नहीं बदले तो होगी गुज़र नहीं।

10: बहुत मासूम लगता है सितमगर

बहुत मासूम लगता है सितमगर,
हमें हैरत-ज़दा करता है अक्सर।

उतर पाते नहीं हम दिल में उसके,
ख़ुदा ही जाने जो है दिल के अंदर।

समझकर भी नहीं समझा सके हम,
नहीं सुनता हमारी दिल-ए-मुज़्तर[1]।
[1]बेचैन दिल

बना हक़-आश्ना[2] जन्नत का वाइज़,
गया हर शाम वो भी सू-ए-साग़र।
[2]सत्य का जानकार

हमें भी याद आया गाँव अपना,
हुए जब शहर के हालात बद-तर।

उतरती नींद आँखों में नहीं क्यों,
सजाते हम रहे हर रात बिस्तर।

कमाया हमने क्या ता-उम्र 'गौतम'
बताएगा मलक[3] सब रोज़-ए-महशर।
[3]चित्रगुप्त

11: रात में आई तो पुर-ग़म आई

रात में आई तो पुर-ग़म[1] आई,
नींद गहरी तो सुब्ह-दम[2] आई।
[1]दुःख के साथ [2]सुबह होते ही

अलविदा बोलने हमें अक्सर,
ज़िंदगी सामने पुर-नम[3] आई।
[3]नम आँखों के साथ

कोई उम्मीद नहीं दिन देता,
रात रोज़ाना सर-ब-ख़म[4] आई।
[4]सर झुकाए

याद का बोझ कुछ हटाने पर,
साँस आई मगर बे-दम[5] आई।
[5]कमजोर

कभी तन्हाई में बैठे जाकर,
एक आवाज़-ए-इशक़म[6] आई।
[6]मैं प्यार हूँ की आवाज़

कू-ए-जानाँ का ख़्वाब आया तो,
तलब-ए-यार हो मोहकम[7] आई।
[7]मजबूत/तीव्र

ठोकरों से सबक़ मिले 'गौतम',
अक़्ल तो आई मगर कम आई।

12: किसलिए प्यार का हिसाब करें

किसलिए प्यार का हिसाब करें,
दिल करे जब तो बे-हिसाब करें।

हँसा करें ये है अच्छी आदत,
जनाब आँख न पुर-आब[1] करें।
[1]आँसू भरना

दौर कोई भी हो मुनासिब है,
आप रू[2] को पस-ए-नक़ाब करें।
[2]चेहरा

किसलिए जाएं लोग दरिया तक,
दिल बहल जाएगा ग़र्क़ाब[3] करें।
[3]डुबोना

चुना है मीर-ए-महफ़िल[4] सबने,
क्यों नहीं दाद-ए-इंतिख़ाब[5] करें।
[4]सभा प्रमुख [5]चुनाव की प्रशंसा

चुप का मतलब निकाला जाता है,
हक़ की बातों का तो ईजाब[6] करें।
[6]सहमत होना

दिल नहीं लग रहा मेरा 'गौतम',
अब मुकम्मल[7] कोई अज़ाब[8] करें।
[7]स्थायी [8]प्रकोप

13: बशर के साथ तो हरदम हुजूम रहता है

बशर के साथ तो हरदम हुजूम[1] रहता है,
कोई तन्हाई में भी बिल-उमूम[2] रहता है।
[1]भीड़ [2]सामान्यतः

गुफ़्तगू होने पर बढ़ जाती हैं बातें लेकिन,
गुफ़्तगू के बिना दिल तो मग़मूम[3] रहता है।
[3]दुखी

जिस्म रहता नहीं मौजूद हर जगह लेकिन,
कई टुकड़ों में आदमी मक़्सूम[4] रहता है।
[4]बंटा हुआ

लोग मज़लूमों[5] के बारे में बोलते हैं जहाँ,
बहुत ख़ामोश वहाँ पर मज़लूम रहता है।
[5]बेचारे

गिनती होती नहीं हैं दोस्तों में उसकी कभी,
काम जब आन पड़े तो मा'दूम[6] रहता है।
[6]लापता

कू-ए-जानाँ में पड़ा है तो पड़ा रहने दो,
एक दीवाना तो ज़ेर-ए-महकूम[7] रहता है।
[7]हुक्म के अंतर्गत

भूलते जाना है इंसान की फ़ितरत 'गौतम',
दिल में पैवस्त वादा-ए-मौहूम[8] रहता है।
[8]पूरा नहीं हुआ वादा

14: गया वादे का देकर झुनझुना है

गया वादे का देकर झुनझुना है,
मेरा दिल शाम से ही अनमना है।

ये राह-ए-इश्क़ है पा को बताओ,
इशारे पर ही चलना ठिठकना है।

शराफ़त की क़दर होती नहीं अब,
गिराकर दूसरों को लपकना है।

दुआ भी चारागर देनी थी तुमको,
दवा से दर्द बढ़कर दो-गुना है।

अगर नक़्क़ार-ख़ाने में खड़े हो,
तुम्हें ही सबसे ज़्यादा चीख़ना है।

मिले हैं मुस्कुराते आते-जाते,
बना मौसम अभी कुछ गुनगुना है।

हुए वाक़िफ़ हैं उससे लोग सारे,
ज़बाँ पे रहता कोई उलहना है।

बहुत मीठी ज़बाँ रखता है 'गौतम',
अगरचे तौर में अक्स-ए-अना[1] है।

[1]अकड़

15: मुसलसल याद वो आते रहेंगे

मुसलसल[1] याद वो आते रहेंगे,
यूँ तन्हाई को झुठलाते रहेंगे।
[1]लगातार

उठेगा दर्द भी गाहे-ब-गाहे[2],
पुराने ज़ख़्म सहलाते रहेंगे।
[2]कभी कभी/बीच बीच में

ज़बाँ से कुछ नहीं कोई कहेगा,
सभी को आँख दिखलाते रहेंगे।

नए अंदाज़ का होगा सितम ये,
करेंगे वादा बहलाते रहेंगे।

हुआ जो है वही होता यहाँ है,
तजरबा-कार समझाते रहेंगे।

यहाँ उक़्दा-कुशा[3] कोई नहीं है,
सभी मसले को उलझाते रहेंगे।
[3]मामला सुलझाने वाला

तमाशा देखने क्या जाए 'गौतम',
ये परचम यूँही लहराते रहेंगे।

16: दरख़्त राह में बे-समर और सूखे मिले

दरख़्त राह में बे-समर[1] और सूखे मिले,
हमें तो रहनुमा तमाम रूखे-सूखे मिले।
[1]बिना फल वाले

अजीब हाल तिश्नगी का नज़र आता है,
चश्म में आब और होंठ फटे-सूखे मिले।

दूर से देखकर दिल हाथ से निकलता है,
परी-रू पास से देखे मिज़ाज रूखे मिले।

निकल गए थे बहुत लोग कमाने खाने,
माल-ए-मुफ़्त पचाने को कई भूखे मिले।

फटी हुई मेरी आँखों की गवाही ले लो,
हमें तो शहर में तमाम ज़र[2] के भूखे मिले।
[2]पैसा

सभी के काम नहीं आएगा मरहम 'गौतम',
हैं ऐसे लोग बहुत जिनके ज़ख़्म सूखे मिले।

17: उम्मीद का चराग़ एक जलाए रखना

उम्मीद का चराग़ एक जलाए रखना,
वो एक याद कलेजे से लगाए रखना।

नज़र उठा के देखना भी ख़ता मानेंगे,
हुज़ूर में जबीं को आप झुकाए रखना।

बात से बात निकलने से बन भी सकती है,
बात का सिलसिला ज़रूर बनाए रखना।

हमने देखा है कई बार दिल को पछताते,
वजह माकूल सही इसको मनाए रखना।

किसी के पास नहीं इसका है इलाज कोई,
दर्द-ए-इश्क़ को हर हाल छुपाए रखना।

बात जन्नत की अच्छी लगने लगी रिंदों को,
साक़ी मयख़ाने में वाइज़ को बिठाए रखना।

लोग रखते हैं भरोसा तो आप भी रख लें,
ख़ुदा का नाम आप लब से लगाए रखना।

वक़्त भर देता है हर ज़ख़्म एक दिन 'गौतम',
आप बस अपने हौसले को बचाए रखना।

18: दरिया-ए-वक़्त के हवाले हैं

दरिया-ए-वक़्त के हवाले हैं,
जियाले[1] हौसला संभाले हैं।
[1]साहसी

चंद प्याले पड़े रहे खाली,
मिले लबरेज़ चंद प्याले हैं।

ख़बर चबाने में मज़ा आए,
डाले इसमें गए मसाले हैं।

गुनाह बख़्श दिए जायेंगे,
लोग ऐसा गुमान पाले हैं।

राज़ पोशीदा सामने आते,
नहीं माज़ी गए खंगाले हैं।

बीच में मैं हूँ परेशान खड़ा,
दोनों-बाज़ू हरम शिवाले हैं।

फिर किसी रोज़ गुफ़्तगू करिए,
मिज़ाज आज ठीले-ढाले हैं।

आई माहौल में गर्मी आई,
नए जुमले गए उछाले हैं।

आज क्या बात बनेगी 'गौतम',
आज सब बैठे भोले-भाले हैं।

19: वो ख़फ़ा है तो मनाने निकले

वो ख़फ़ा है तो मनाने निकले,
बात करने के बहाने निकले।

घुमा-फिरा के बात होती रही,
बहस में दोनों सयाने निकले।

थे कहीं और निशाने उनके,
गलत हमारे निशाने निकले।

एक ख़्वाहिश ये लिए बैठे हैं,
वो पता मेरा लगाने निकले।

अदू से मिलने वो निकले गोया,
दिल हमारा हैं दुखाने निकले।

हाथ से हाथ पकड़ ले शायद,
हम उसे नब्ज दिखाने निकले।

बज़्म है उसने सजाई 'गौतम',
कलाम हम भी सुनाने निकले।

20: याद धुँधली कोई पलटती है

याद धुँधली कोई पलटती है,
नींद फिर बीच में उचटती है।

किताब-ए-माज़ी के तन्हाई में,
सफ़्हे अक्सर नज़र उलटती है।

जान को कोसते रहे हम भी,
जान ही रोज़ रोज़ खटती है।

मौत आती है अपनी मर्ज़ी से,
ये पटाने से नहीं पटती है।

आप बे-वजह हो रहे दुबले,
ज़िंदगी सबकी यूँही कटती है।

दुनिया हर हादसा भुलाती है,
सबक़ दो दिन ज़रूर रटती है।

हादसे की गवाही चाही तो,
भीड़ फ़ौरन जनाब छटती है।

एक हस्ती को देखिए 'गौतम',
कितने हिस्सों में रोज़ बटती है।

21: दोनों ख़ामोश रह गए, गिला दराज़ रहा

दोनों ख़ामोश रह गए, गिला दराज़[1] रहा,
नाम की दोस्ती का सिलसिला दराज़ रहा।
[1]लंबा

हाल पूछा नहीं उसने न हमने बतलाया,
हमारे बीच तो शिकवा-गिला दराज़ रहा।

साफ़ लफ़्ज़ों में कभी बात की नहीं हमने,
बयाँ नहीं हुआ क़स्द-ए-गिला[2] दराज़ रहा।
[2]शिकायत का इरादा

जिससे बुनियाद इमारत की हो गई ढीली,
ज़ेहन में नक़्श वही ज़लज़ला[3] दराज़ रहा।
[3]भूकंप

उखाड़ा करते हैं सब लोग गड़े मुर्दों को,
जो हमसे हो गया था मुतजला[4] दराज़ रहा।
[4]खुल जाना

हमने इमदाद[5] कभी माँगी नहीं रब से भी,
अना[6] के मारे दौर-ए-इब्तिला[7] दराज़ रहा।
[5]मदद [6]घमंड [7]बुरा समय

सफ़र में कोई नहीं साथ किसी के 'गौतम',
लोग सब तन्हा रहे क़ाफ़िला दराज़ रहा।

22: समेटने लगा हूँ ख़ुद को बिखरने के लिए

समेटने लगा हूँ ख़ुद को बिखरने के लिए,
ठोकरें जानकर खाई हैं संभलने के लिए।

लोग देने लगे हैं हमको दिलासा कहकर,
शोख़ के वादे तो होते हैं मुकरने के लिए।

शेख़ के आने पर है ए'तिराज़ साक़ी को,
रिंद मयख़ाने में आते हैं बहकने के लिए।

बज़्म से उसकी उठते उठते बैठ जाता हूँ,
गर इशारा किया गया हमें रुकने के लिए।

हम भी तैयार हैं हर इम्तिहान देने को,
इश्क़ में इंतिहा-ए-हद[1] को परखने के लिए।
[1] अंतिम सीमा

दस्त-ए-जल्लाद[2] की ताकत को आज़मायेंगे,
आए दीवाने हैं सूली पे लटकने के लिए।
[2] जल्लाद का हाथ

ऐसी नाराज़ी तो अच्छी नहीं होती 'गौतम',
राह छोड़ी नहीं गई कहने-सुनने के लिए।

23: हमारी आँख से वो ओझल है

हमारी आँख से वो ओझल है,
ख़याल ज़ेहन में झलाझल[1] है।
[1]झिलमिलाता

याद उसको नहीं रहा लेकिन,
हमें तो याद अहद-ए-अव्वल[2] है।
[2]प्रथम वादा/वचन

आज तो इंतिज़ार में उसकी,
नींद से पलक हुई बोझल है।

उफ़क़ को नापने गया है जो,
परिंदा वो नज़र से ओझल है।

एक आवाज़ सुनी कानों ने,
ये हक़ीक़त है या तख़य्युल[3] है।
[3]कल्पना

मेरे क़ाबू में अब नहीं है ये,
मान लेते हैं ये दिल पागल है।

ज़िंदगी लग रही अपनी जैसे,
क़फ़स[4] में क़ैद एक बुलबुल है।
[4]पिंजरा

किसलिए जा रहे उठकर 'गौतम',
अभी तो इब्तिदा-ए-महफ़िल[5] है।
[5]सभा का प्रारम्भ

24: हैसियत-दार है ये पक्का है

हैसियत-दार है ये पक्का है,
बैठकर गुड़गुड़ाता हुक्का है।

देगा फ़ौरन से पेशतर वादा,
पूरा होगा नहीं ये पक्का है।

हुआ मौके से वो रफ़ू-चक्कर,
देखने वाला हक्का-बक्का है।

लोग सज्दा ख़ुदा को करते हैं,
ज़िंदगी किंतु ज़ेर-ए-सिक्का[1] है।
[1]पैसे के अधीन

सनम-परस्त है दुनिया सारी,
ज़बाँ पे चस्पाँ काशी मक्का है।

बात करता है जो हक़ीक़त की,
हमें तो मिलता इक्का-दुक्का है।

अपना दस्तार[2] संभाले रखना,
इसके पीछे पड़ा उचक्का है।
[2]पगड़ी / टोपी

सुर्ख़रू[3] होगा एक दिन 'गौतम',
जिसे आता लगाना धक्का है।
[3]सफल

25: ज़िंदगी कब से खड़ी है मौत की दहलीज़ पर

ज़िंदगी कब से खड़ी है मौत की दहलीज़ पर,
यार की सूरत है चस्पाँ सोच की दहलीज़ पर।

दैर हो या हरम सज्दा करते हैं फ़ुर्सत से सब,
सज्दा बे-नाग़ा किया है यार की दहलीज़ पर।

जोड़कर सर बैठ जाते हैं बहस करने को सब,
आदमी रहता है तन्हा फ़िक्र की दहलीज़ पर।

सुनते हैं गाहे-ब-गाहे लेता है सबकी ख़बर,
कान देकर हम हैं बैठे बज़्म की दहलीज़ पर।

चलते जलते सारा दिन गो रूठ जाता है मेहर[1],
सुबह देता हाज़िरी है फ़लक की दहलीज़ पर।
[1]सूरज

सुब्ह-दम दामन छुड़ाकर रोज़ जाते हैं निकल,
ख़्वाब सारे फिर खड़े हैं रात की दहलीज़ पर।

देखना हर दिन पड़ेगा सबको ही 'गौतम' यहाँ,
जो तमाशे हो रहे हैं ज़ीस्त[2] की दहलीज़ पर।
[2]जीवन

26: हमने भी एहतियात बरते हैं

हमने भी एहतियात[1] बरते हैं,
इश्क़ करते हैं पर मुकरते हैं।
[1]सावधानियाँ

तर्क-ए-वादा ना-पसंद सही,
गिला करने से लोग डरते हैं।

हरम है, दैर है, मय-ख़ाना है,
जहाँ पे दिल-जले ठहरते हैं।

दर्द दिन में नहीं महसूस हुए,
दर्द बस शब ढले उभरते हैं।

वस्ल का एक तख़य्युल[2] करते,
हिज्र के रंग तब निखरते हैं।
[2]कल्पना

प्यार होता है अगर ज़ख़्मों से,
फिर नहीं ज़ख़्म कभी भरते हैं।

इस-क़दर छेड़िए नहीं 'गौतम',
कुछ भी दीवाने कर गुज़रते हैं।

27: दश्त-आवारा बे-मकान बिल-उमूम रहे

दश्त-आवारा[1] बे-मकान बिल-उमूम[2] रहे,
ओढ़कर सिर्फ आसमान बिल-उमूम रहे।
[1]जंगल में घूमते आवारा [2]बहुधा

पसंद लोग नहीं करते साफ़-गोई को,
ज़बान रख के बे-ज़बान बिल-उमूम रहे।

कभी बहस का कोई फ़ैसला नहीं निकला,
बहस में हम भी दरमियान बिल-उमूम रहे।

सर-ब-सज्दा हमें होने से अना ने रोका,
सुनते हर बार की अज़ान बिल-उमूम रहे।

कभी लेते नहीं दुनिया की हम ख़बर कोई,
इतना हम ग़म में नीम-जान[3] बिल-उमूम रहे।
[3]अध-मरे

मेहरबानों की क़द्र हम भी कर नहीं पाए,
मेहरबाँ भी ना-मेहरबान बिल-उमूम रहे।

जुनून में निकल पड़े हैं धूप में 'गौतम',
बुलाते हमको साएबान[4] बिल-उमूम रहे।
[4]बरामदा

28: न मैं उसका न वो मेरा ख़ुदा है

न मैं उसका न वो मेरा ख़ुदा है,
हमें इक मोड़ पर होना जुदा है।

मेरा दिल आश्ना[1] तूफ़ान का है,
ख़फ़ा रहता हमेशा नाख़ुदा[2] है।
[1]प्रेमी [2]नाविक

करेंगे गुफ़्तगू फ़ुर्सत से नासेह,
हमारा ध्यान सू-ए-मय-कदा है।

ख़ुदा से माँगने आए हैं दोनो,
बग़ल मे शाह के देखो गदा[3] है।
[3]भिखारी

हमारी बात पर क्यों ध्यान देते,
नहीं ऊँचा हमारा ओहदा है।

अभी भी मुंतज़िर है दीद मेरी,
अगरचे जान बर-लब-आमदा[4] है।
[4]अधरों तक आयी

समझना चाहते हैं लोग 'गौतम',
वाँ ज़ेर-ए-बहस कोई आखदा[5] है।
[5]कहा गया

29: दरिया की तेज़ मौजों पर संग उछाले हैं

दरिया की तेज़ मौजों पर संग[1] उछाले हैं,
ऐसा दिखा रहे हैं साहिल को संभाले हैं।
[1]पत्थर

ख़ामोशी से उसने ये एहसास दिलाया है,
छाले ज़बाँ पे निकले हैं होठों पर ताले हैं।

तस्वीर तो दीवारों से उसकी हटा दी है,
उसके ख़याल मैंने कब दिल से निकाले हैं।

दामन में किसी के भी एक दाग़ नहीं पाया,
कुछ हाथ लग गया है जब माज़ी[2] खंगाले हैं।
[2]अतीत

अब लोग एहतियातन घर से नहीं निकलते,
हैरान करने वाले अब सारे जियाले[3] हैं।
[3]जोशीले

नासेह की बातों में आया है जब से साक़ी,
हर रिंद के हाथों में बस खाली पियाले हैं।

शिरकत के लिए अब से जायेगा नहीं 'गौतम',
महफ़िल में सिर्फ शिरकत अब करते निराले हैं।

30: अब न मंज़िल का पता है न कारवाँ का पता

अब न मंज़िल का पता है न कारवाँ का पता,
अब न रहबर[1] का पता है न रह-रवाँ[2] का पता।
[1]मार्गदर्शक [2]सहयात्री

शहर के बारे में सबको बताने वालों को,
न झोपड़ी का पता है न है ऐवाँ[3] का पता।
[3]महल

लिहाज़ उसने मेरी उम्र का किया इतना,
वो हमसे पूछने लगा किसी जवाँ का पता।

ज़बाँ से जिसके लफ़्ज़ भी निकल नहीं पाते,
उसी से पूछने गए हैं ना-तवाँ[4] का पता।
[4]कमज़ोर

अपनी मर्ज़ी से चले आए हैं जो सहरा में,
पूछते फिरते हैं क्यों दरिया-ए-रवाँ का पता।

बिना सुने ही दास्तान की गई ख़ारिज,
न है किरदार का पता न है उनवाँ[5] का पता।
[5]शीर्षक

बात नासेह की सुनकर है लग रहा 'गौतम',
न उसे याँ का कुछ पता न उसे वाँ का पता।

31: खरामा खरामा कहाँ आ गए

खरामा[1] खरामा कहाँ आ गए,
कहाँ से चले थे कहाँ आ गए।

[1]धीरे/आराम से

बहुत देर से ऊबे बैठे थे हम,
थके जब वहाँ तो यहाँ आ गए।

यहाँ भी चमन है वही रंग-ओ-बू,
बता चश्म-ए-हैराँ कहाँ आ गए।

हमेशा जो साए थे लिपटे रहे,
वो सब पीछे पीछे यहाँ आ गए।

मुसलसल सफ़र के मुसाफ़िर रहे,
लगा नापकर दो-जहाँ आ गए।

जहाँ हर सुबह तौबा कहते थे वो,
हुई शाम मय-कश वहाँ आ गए।

मेरा दिल है क़ाबू में 'गौतम' नहीं,
जहाँ इसने चाहा वहाँ आ गए।

32: जब लगे डूबने साग़र में, दरिया ने हमें पुकार लिया

जब लगे डूबने साग़र[1] में, दरिया ने हमें पुकार लिया,
दरिया में लगे डूबने तो, साहिल ने हमें पुकार लिया।

[1]मदिरा का प्याला

ज़ख़्मों से ख़ूगर[2] रहने को, एहसान अदू का लेने को
घर से निकले तो मेहरबान यारों ने हमें पुकार लिया।

[2]अभ्यस्त

सन्नाटों से घबराए हम जब निकले थे घर से बाहर,
घर की दीवारों ने हँसकर पीछे से हमें पुकार लिया।

लेनी है नहीं सफ़ाई कुछ, लेनी है नहीं दलील कोई,
मुंसिफ़ ने सज़ा बढ़ाने को दोबारा हमें पुकार लिया।

लगता था ग़ैरों के हाथों जायेगी 'गौतम' जान कभी,
उम्मीद टूटने से पहले क़ातिल ने हमें पुकार लिया।

33: मैं हूँ बेदार नहीं पर हूँ बद-हवास नहीं

मैं हूँ बेदार[1] नहीं पर हूँ बद-हवास[2] नहीं,
किसी के सामने ग़म करता बे-लिबास नहीं।
[1]जागा हुआ [2]पगलाया हुआ

उसने दीवाना बताकर ख़ास एहसान किया,
मानते हम भी यही थे हैं फ़र्द-ए-ख़ास[3] नहीं।
[3]विशेष व्यक्ति

आने वालों को यह आगाह कर दिया जाए,
कू-ए-जानाँ[4] है यहाँ राह-ए-निकास[5] नहीं।
[4]प्रेम गली [5]निकलने का रास्ता

बहुत जतन से बुत तराशते रहे बुत-गर[6],
जानते वो हैं संग में कोई एहसास नहीं।
[6]मूर्तिकार

उसने दीदार का वादा नहीं किया लेकिन,
खड़े हुए हैं जो सफ़ में वो हैं बे-आस नहीं।

आते-जाते मिला कभी तो हँस के मिलता हूँ,
वो समझता है मैं फ़िराक़[7] में उदास नहीं।
[7]वियोग

ख़्वाब में यार से हो जाता है मिलना 'गौतम',
गो हक़ीक़त में यार होता आस-पास नहीं।

34: आज फ़ुर्सत भी है जान-ए-जानाँ

आज फ़ुर्सत भी है जान-ए-जानाँ[1],
तेरी चाहत भी है जान-ए-जानाँ।
[1]जान से प्रिय

साये माज़ी[2] के आज साथ नहीं,
और ख़ल्वत[3] भी है जान-ए-जानाँ।
[2]अतीत [3]एकांत

कोई तूफ़ान नहीं साँसों में,
आज राहत भी है जान-ए-जानाँ।

रंज का एक भी एहसास नहीं,
ख़ुश-तबीयत भी है जान-ए-जानाँ।

सवाल से हमें अज़ीज़ों के,
मिली मोहलत भी है जान-ए-जानाँ।

आज मौसम ने है बदली करवट,
एक निकहत[4] भी है जान-ए-जानाँ।
[4]खुश्बू

आप मिलते हैं तो चुप रहते हैं,
ये शिकायत भी है जान-ए-जानाँ।

हिज्र का अपना मज़ा होता है,
और आफ़त भी है जान-ए-जानाँ।

आप ने अपना कह दिया 'गौतम',
मिली शोहरत भी है जान-ए-जानाँ।

35: पाते ही ख़बर पहले तो हैरान हो गए

पाते ही ख़बर पहले तो हैरान हो गए,
जब समझे बात लोग परेशान हो गए।

करने को एहतिराम[1] थे सफ़ में खड़े हुए,
आने में परेशानी के ऐलान हो गए।
[1]सम्मान

करते हैं पेश रोज़ एक नुक़्ता-ए-नज़र[2],
फिर बहस के लिए नए बुर्हान[3] हो गए।
[2]अपना दृष्टिकोण [3]नए तर्क

फिर आ गए वो मिलने अयादत के बहाने,
फिर दिल पे आज यार के एहसान हो गए।

दामन को चाक करके घूमना हुआ फ़ैशन,
कुछ ज़ख़्म दिखाकर सभी ज़ीशान[4] हो गए।
[4]प्रतिष्ठित/मशहूर

कुछ देर तलक शोर रहा कारवाँ के साथ,
फिर उसके बाद रास्ते सुनसान हो गए।

हैं वक़्त की बिसात पर सब मोहरे 'गौतम',
फिर लापता सब नाम-ओ-निशान हो गए।

36: चार-सू अज़्म-ए-ख़ुदाई है

चार-सू अज़्म-ए-ख़ुदाई[1] है,
सभी की हैसियत इकाई है।
[1]ख़ुदा की दुनिया का जलवा

रास्ता पैरों से गया अपना,
शेख़ ये कैसी रहनुमाई है।

आश्नाई[2] करो ता-उम्र मगर,
ज़िंदगी करती बेवफ़ाई है।
[2]मोहब्बत

रज़ा[3] में उसकी है रज़ा मेरी,
हमारी किसलिए रुस्वाई है।
[3]सहमति

ख़ूँ का छींटा भी नहीं दामन पर,
ग़ज़ब की हाथ में सफ़ाई है।

इश्क़ में बशर ख़ुद तबाह हुआ,
और फिर दे रहा दुहाई है।

बात सबने यही कही 'गौतम',
मौत ही आख़िरी रिहाई है।

37: तलाशते रहे शहर में मदह-ख़्वाँ का पता

तलाशते रहे शहर में मदह-ख़्वाँ[1] का पता,
हमें न बज़्म मिली है न ग़ज़ल-ख़्वाँ[2] का पता।
*1*प्रशंसक *2*ग़ज़ल का रसिया

न रास्ता नज़र में और न मंज़िल के निशाँ,
निशान पा के नही हैं न रह-रवाँ[3] का पता।
3 सहयात्री

शहर के बारे में सबको बताने वालों को,
न झोपड़ी का पता है न है ऐवाँ[4] का पता।
*4*महल/अट्टालिका

लिहाज़ उसने मेरी उम्र का किया इतना,
हमी से पूछने लगा किसी जवाँ का पता।

अपनी मर्ज़ी से चले आए हैं जो सहरा में,
पूछते फिरते हैं क्यों दरिया-ए-रवाँ का पता।

बिना सुने ही दास्तान की गई ख़ारिज,
न है किरदार का पता न है उनवाँ का पता।

बात नासेह की सुनकर है लग रहा 'गौतम',
न उसे याँ का कुछ पता न उसे वाँ का पता।

38: दिल हमारा यार के क़ब्ज़े में है

दिल हमारा यार के क़ब्ज़े में है,
तिश्नगी[1] क्यों सहरा[2] के क़ब्ज़े में है।
*1*प्यास *2*मरुथल

यार का दामन नहीं है हाथ में,
बू-ए-दामन तो मेरे क़ब्ज़े में है।

नाला पहुँचेगा कहाँ मालुम नहीं,
लब-कुशाई[3] पर मेरे क़ब्ज़े में है।
*3*लब खोलना *(*बोलना*)*

लाज़मी है फ़िक्र कल की भी रहे,
आज का हर पल मेरे क़ब्ज़े में है।

इस जहाँ की बात हमसे कीजिए,
वो जहाँ तो शेख़ के क़ब्ज़े में है।

रब के क़ब्ज़े में दुआ का है असर,
पर दुआ करना मेरे क़ब्ज़े में है।

मौत से 'गौतम' नहीं घबरा रहा,
हर पतंगा शमा के क़ब्ज़े में है।

39: चंद गुज़रे हुए पल याद आए

चंद गुज़रे हुए पल याद आए,
झील के साथ कँवल याद आए।

किसी के नाम कर दिए थे जो,
सारे लम्हे बे-शग़ल[1] याद आए।
[1]खली बैठे

हमसे मतलब नहीं रहा जिनको,
आज उनके भी दख़ल[2] याद आए।
[2]आपत्तियाँ

बात हमने की अगर जाने की,
कैसे जाते थे मचल याद आए।

थक गए हम जिसे भुलाने में,
बारहा रोज़-ए-अजल[3] याद आए।
[3]मौत के दिन

जिसके शाने[4] थे संभलने के लिए,
गिरे तो वो हम-बग़ल[5] याद आए।
[4]कंधे [5]साथी(बगल में रहने वाले)

दोस्तों पर बहुत भरोसा किया,
कितने थे सीधे-सरल याद आए।

वक़्त-ए-रुख़्सत करीब आने पर,
सभी को अपने अमल[6] याद आए।
[6]अच्छे-बुरे काम

जब भी तन्हाई ने घेरा 'गौतम',
याद आए, बे-ख़लल[7] याद आए।
[7]बिना रोक

40: इस तरह से हिज्र की हर शब गई

इस तरह से हिज्र[1] की हर शब गई,
जान तो लगती रही अब-तब गई।
*1*वियोग

जिस तरफ देखा है सबको देखते,
ये नज़र भी उस तरफ जब-तब गई।

हमने मुँह खोला तो हँगामा हुआ,
शोर में हर बात दिल की दब गई।

जो समझ सकते नहीं मेरी ज़बाँ,
बात उन तक मेरी बे-मतलब गई।

यार ने दीवाना हमको कह दिया,
मेरी शोहरत चार-सू अग़लब[2] गई।
*2*संभवतः

आह सीने में है जब तक राज़ है,
लब पे आई है तो फिर बर-लब[3] गई।
*3*लबों पर (दूसरों के)

बेरुख़ी से बात 'गौतम' से करी,
बात छोटी सी कहाँ या-रब[4] गई।
*4*हे भगवान्

41: बस यूँही बेसबब उदास रहे

बस यूँही बेसबब उदास रहे,
चंद साये थे आस-पास रहे।

अब लरज़ने लगे हैं आहट से,
कभी बे-ख़ौफ़ बे-हिरास[1] रहे।
[1]अप्रभावित

कल की तस्वीर है नहीं इनमें,
ख़्वाब जो देखे बे-असास[2] रहे।
[2]बे-बुनियाद/आधार हीन

मामला तय नहीं हुआ कोई,
सिफ़र दलील-ओ-कयास रहे।

सब से संजीदा बात करते हैं,
मुझसे करते मज़ाक़-ए-ख़ास रहे।

बहस हम शेख़ से नहीं करते,
अगरचे दिल से हक़-शनास[3] रहे।
[3]सत्य के जानकार

बात दिल की नहीं कही 'गौतम',
आदतन बैठे बद-हवास रहे।

42: सदा-ए-वक़्त वक़्त पर सुनते

सदा-ए-वक़्त[1] वक़्त पर सुनते,
बात हर-वक़्त वक़्त पर सुनते।
[1]समय की आवाज़

ये हुनर सीखना ज़रूरी था,
इब्न-उल-वक़्त[2] वक़्त पर सुनते।
[2]अवसरवादी

कुछ सबक़ सीखने को मिल जाते,
क़िस्सा-ए-वक़्त वक़्त पर सुनते।

तेज़ रफ़्तार से अब क्या होगा,
कार-ए-वक़्त[3] वक़्त पर सुनते।
[3]समय के काम

सज़ा-ए-हुक्म-उदूली जाएज़,
हुक्म-ए-वक़्त वक़्त पर सुनते।

देर से वक़्त को समझे 'गौतम',
चर्चा-ए-वक़्त वक़्त पर सुनते।

43: पलट के देखा है जाते जाते

पलट के देखा है जाते जाते,
क्या मिलेंगे कभी आते जाते।

एक ज़ुरअत[1] करी, शिकायत की,
ख़फ़ा तो होना था जाते जाते।
[1]दुस्साहस

इश्क़ में बावला हुआ है वो,
गुज़ारता है शब गाते गाते।

दर-ओ-दीवार बना भी लें तो,
उम्र जाएगी छत छाते छाते।

एक हँगामा हुआ महफ़िल में,
बात की जाने की आते आते।

राब्ता गहरा हो गया सबसे,
संग हर शख़्स से खाते खाते।

हमें ख़ूगर[2] बना दिया 'गौतम',
मेरे सर पर सितम ढाते ढाते।
[2]अभ्यस्त

44: ज़ेहन-ओ-दिल हाथ से जाते रहे

ज़ेहन-ओ-दिल हाथ से जाते रहे,
याद हमको रोज़ वो आते रहे।

बस्तियों को फूँकने के वास्ते,
धीरे धीरे दिल को सुलगाते रहे।

देखकर कोई सबक़ लेता नहीं,
इश्क़ कर के लोग पछताते रहे।

गुत्थियाँ सुलझाने को बैठे मगर,
गुत्थियों को और उलझाते रहे।

तब्सिरा हालात का करते नहीं,
सब हमें हालात बतलाते रहे।

ज़िक्र था हमने ज़माने का किया,
और वो सुन सुन के शर्माते रहे।

बहस जन्नत की हक़ीक़त पर करी,
शेख़ साहब हम पे गुर्राते रहे।।

जिनको समझाने को था 'गौतम' गया,
बैठकर सब उसको समझाते रहे।

45: आज रोज़-ए-ईद है, रोज़-ए-सईद है

आज रोज़-ए-ईद है, रोज़-ए-सईद[1] है,
आज तो ज़बान पर दाद-आफ़रीद[2] है।
*1*शुभ दिन *2*प्रशंसा पैदा होना

हर नज़र मुरीद है, ये हिलाल-ए-ईद[3] है,
लुत्फ़ की तज्दीद[4] है, ये बहार-ए-ईद है।
*3*ईद का चाँद *4*नयापन

ये ख़ुशी मुफ़ीद[5] है, पुर-नशात-ए-दीद[6] है,
तारी हर बशर पे आज तो सुरूर-ए-ईद[7] है।
*5*उपयोगी *6*ख़ुशी से भरा *7*ईद का नशा

गुफ़्त-ओ-शुनीद[8] है, दीद-ओ-शुनीद[9] है,
आने वाले साल की बेहतर तमहीद[10] है।
*8*कहा और सुना *9*देखा और सुना *10*भूमिका

आज सुब्ह-ए-ईद है, दिल तो पुर-उमीद है,
कह रहा मुबारकाँ, जिसमें भी फ़हमीद[11] है।
*11*समझ/विवेक

आज ख़ुश ख़ुर्शीद[12] है, कर रहा ताईद[13] है,
आज तो 'गौतम' गिला कोई भी तरदीद[14] है।
*12*सूरज *13*अनुमोदन *14*मना होना

46: ख़ुद अपने वास्ते अब एक मसअला हैं हम

ख़ुद अपने वास्ते अब एक मसअला[1] हैं हम,
सुरूर-ए-जिद्द-ओ-जहद[2] से मुब्तला[3] हैं हम।
[1]समस्या [2]संघर्ष का नशा [3]आकर्षित

जिस्म-ओ-जाँ कभी तन्हा नहीं रहता मेरा,
अपने भीतर मगर लिए हुए ख़ला[4] हैं हम।
[4]शून्य

जिसे आग़ाज़-ओ-अंजाम[5] का पता ही नही,
सुबह से शाम तक अजीब सिलसिला हैं हम।
[5]प्रारम्भ और परिणाम

बहुत अदब से बुलाया है हमको महफ़िल में,
सबको बहलाने का अब एक मश्ग़ला[6] हैं हम।
[6]एक खेल

ध्यान देता नहीं है कोई सबकी बातों पर,
एक हसरत थी मान लेते सब फ़ुज़ला[7] हैं हम।
[7]बुद्धिमान

सबने रक्खा है मुसलसल हमें ही ज़ेर-ए-बहस,
सबको मंज़ूर नहीं जो वह फ़ैसला हैं हम।

आपकी तरह तो शीरीं नहीं हम हैं 'गौतम',
बहुत ज़रूरी है जो नमक का डला हैं हम।

47: दश्त-ए-माज़ी में भटक जाता

दश्त-ए-माज़ी[1] में भटक जाता,
उसी पे ध्यान एक टक जाता।
[1]अतीत का जंगल

प्यार से देखता मेरी जानिब,
बज़्म में सबका मुँह लटक जाता।

नज़र उठा के देख लेने पर,
जनाब-ए-आली को खटक जाता।

अक़्स से अपने ख़फ़ा होने पर
यक़ीं है आईना चटक जाता।

सज्दा करने के बहाने आशिक़,
उसकी चौखट पे सर पटक जाता।

उमड़ के निकला था अगर आँसू,
पलक पे किसलिए अटक जाता।

राब्ता कोई न रहता 'गौतम'
हमारा हाथ वह झटक जाता।

48: इरादा सब्र आज़माना है

इरादा सब्र आज़माना है,
पेश करता नया बहाना है।

भीड़ भारी जुटी है कूचे में,
सिर्फ चुनना उसे निशाना है।

बड़ी मख़मूर[1] हैं आँखें उसकी,
इसी में आज डूब जाना है।
[1]नशीली

तक़ाज़ा सितम का करते रहिए,
दिल को ख़ूगर[2] अगर बनाना है।
[2]अभ्यस्त/आदी

सभी के पास हैं क़िस्से अपने,
अपना क़िस्सा किसे सुनाना है।

लिखा नसीब में जो है, होगा,
लकीर-ए-दस्त[3] क्या दिखाना है।
[3]हाथ की रेखाएँ

सज्दा करने नहीं गया 'गौतम',
ज़ेहन में एक आस्ताना[4] है।
[4]चौखट

49: शाम होते ही काँप जाते हैं

शाम होते ही काँप जाते हैं,
इरादे शब के भाँप जाते है।

बिल से माज़ी के रात होते ही,
काटने काले साँप जाते हैं।

ख़्वाब के पीछे दौड़ जाने पर,
लेटे लेटे ही हाँफ जाते हैं।

ख़याल रतजगा कराते हुए,
थका के पलक ढाँप जाते हैं।

रातभर पेश कीं दलीलें पर,
फैसले तो ख़िलाफ़ जाते हैं।

आईना सहर मे दिखाता है,
ख़्वाब जो नक़्श छाप जाते हैं।

अच्छा लगता नहीं हमें 'गौतम',
मेरे आते ही आप जाते हैं।

50: नया क्या है वही सब है पुराना

नया क्या है वही सब है पुराना,
वही है इश्क़ वो ही है फ़साना।

वही है हुस्न से सबको शिकायत,
वही बोसीदा[1] ज़ौक़-ए-आशिक़ाना[2]।
[1]बासी/पुराना [2]प्यार करने का आनंद

मज़ा कोई नहीं अख़बार में है,
हुआ अख़बार पढ़ना अहमक़ाना[3]।
[3]बेवकूफी

हुक़ूक़-ए-बशर[4] पर की बात उसने,
दिखा अंदाज़ जिस में मालिकाना।
[4]आदमी का अधिकार

नहीं मिलती कभी ताबीर[5] इनकी,
रहा ख़्वाबों का ज़ारी आना-जाना।
[5]स्वप्न फल

अकेले चैन से रहते नहीं हम,
हुआ घर यादों का मेहमान-ख़ाना।

क़फ़स[6] से छोड़कर देखो तो 'गौतम',
परिन्दों का नहीं यह आशियाना।
[6]पिंजरा

51: अपने ही अक्स से नाराज़ हुए

अपने ही अक्स से नाराज़ हुए,
जब मुक़ाबिल हसीं अंदाज़ हुए।

वक़्त क़ाबू मे कर नहीं पाए,
सीख कर हुनर घड़ी-साज़ हुए।

कितनी बातें लिए रहे दिल में,
सामने उसके बे-आवाज़ हुए।

गिला वाजिब सही कहें कैसे,
वो तो मानेंगे बे-लिहाज़ हुए।

कू-ए-जानाँ से जब हुए बाहर,
दश्त-ओ-सहरा[1] ही मआज़[2] हुए।
[1]जंगल-रेगिस्तान [2]शरण स्थल

बोलने की मिली है आज़ादी,
इसलिए शोर इर्तिकाज़[3] हुए।
[3]एक जगह एकत्र होना

उसी को सुर्ख़रू कहें 'गौतम',
लफ़्ज़ जिसके असर-अंदाज़ हुए।

52: शजर बे-बर्ग हैं, बे-सरसराहट

शजर बे-बर्ग हैं, बे-सरसराहट,
हवा में भी नहीं है सनसनाहट।

अगरचे पसरा है सन्नाटा गहरा,
हमें चौंका रही ख़ामोश आहट।

शहर में आए थे उम्मीद लेकर,
सभी के चेहरे पर है बौखलाहट।

क़दम को खींचता ले जा रहा है,
मुसाफ़िर में है पैठी अनमनाहट।

ख़ुदा का नाम बेशक ले रहा है,
लबों पे उसके देखी थरथराहट।

जहाँ बच्चे मिले हैं खिलखिलाते
मेरे होठों पे आई मुस्कुराहट।

सहर होने पे 'गौतम' फिर सुनोगे,
परिन्दों के परों की फड़फड़ाहट।

53: पाँव में छाले लिए बैठे हैं

पाँव में छाले लिए बैठे हैं,
लबों पे ताले लिए बैठे हैं।

सभी के तजरबात हैं अपने,
सभी मक़ाले[1] लिए बैठे हैं।
[1]शोध पत्र

सर्द रातों पे बहस करने को,
गरम दोशाले लिए बैठे हैं।

कहाँ फ़ुर्सत है सुनने वालों को,
आह-ओ-नाले लिए बैठे हैं।

सब घोटालों की बात करते हैं,
अपने घोटाले लिए बैठे हैं।

असर नासेह का हुआ ऐसा,
मय बिना प्याले लिए बैठे हैं।

ख़ुद-नुमाई[2] नहीं होती 'गौतम',
आँख में जाले लिए बैठे हैं।
[2]अपना मार्गदर्शन

54: टोकते हैं तो बौखलाते हैं

टोकते हैं तो बौखलाते हैं,
रिंद को शेख़ बरगलाते हैं।

बात करते हैं वो शुरू रब से,
जन्नत-ओ-हूर से मिलाते हैं।

मुरीद हम भी हो गए उनके,
हँसा हँसा के वो रुलाते हैं।

हिज्र में जिसकी जागना तय था,
ख़्वाब उसके हमें सुलाते हैं।

हम मचलते हैं सामने उसके,
वो हमें देखकर चिल्लाते हैं।

बारहा बज़्म से निकाला है,
बारहा बज़्म में बुलाते हैं।

ऐसे देखे हैं सूरमा 'गौतम',
गिला करते हुए हकलाते हैं।

55: मैं जैसा सोचता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो

मैं जैसा सोचता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो,
मैं जैसा बोलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

अगर चाहें तो मेहनत से बदल सकती हैं तक़दीरें,
मगर मैं खौलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

बहुत उम्मीद से सब तोलते हैं कुव्वत-ए-बाज़ू[1],
मैं जितना तोलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

[1]भुजाओं की शक्ति

भटकने वाले ही इक रोज़ मंज़िल पर पहुँचते हैं,
मैं रह पर डोलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

अमन के नाम पर मैं हर सितम मंज़ूर करता हूँ,
मैं सब कुछ झेलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

सुना है वक़्त तो गुज़रा हुआ वापस नहीं आता ,
मैं सब कुछ भूलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

अगरचे चाहता हूँ राब्ता क़ायम रहे 'गौतम',
मैं गाँठें खोलता रहता हूँ गर वैसा नहीं हो तो।

56: अदब-पसंद थे बा-होश रहे

अदब-पसंद थे बा-होश रहे,
साथ बैठे मगर ख़ामोश रहे।

भूल बैठे हैं पता मंज़िल का,
सफ़र में इतना फ़रामोश[1] रहे।
[1]भुलक्कड़

वक़्त से हार मानने वाले,
बहस करने में गर्म-जोश रहे।

अना की बात अब बे-मानी है,
सामने दौर-ए-ख़ुद-फ़रोश[2] रहे।
[2]अपने बिकने के दिन

सोज़-ए-दिल[3] को हवा देने को,
आसमाँ अब्र-ए-सियह-पोश[4] रहे।
[3]दिल की आग [4]काले बादल

रहा वाइज़ से मुखातिब साक़ी,
रिंद सब बैठे बे-ख़रोश[5] रहे।
[5]अनुत्साहित

हमको बच्चे बता रहे 'गौतम',
जीतते कछुए से ख़रगोश रहे।

57: दौर-ए-गुफ़्तगू जब एब-जू पे आएगा

दौर-ए-गुफ़्तगू[1] जब एब-जू[2] पे आएगा,
शुरू वो आप से करेगा तू पे आएगा।
[1]बात करने के समय [2]दोष खोजना

उसी की ओर देखता रहा उम्मीद लिए,
कभी तो रंग-ए-मलाल[3] रू[4] पे आएगा।
[3]दु:ख का रंग [4]चेहरा

सहाब का मक़ाम[5] आसमाँ पे ऊँचा है,
दोष-ए-तिश्नगी[6] तो आबजू[7] पे आएगा।
[5]स्थान [6]प्यास का दोष [7]नदी

छूटते हैं नहीं धब्बे जो उसके दामन से,
इसका इल्ज़ाम हमारे लहू पे आएगा।

बाद जलसे के कुर्सियाँ समेटी जाती हैं,
काम ये देखिए किस फ़ालतू पे आएगा।

तुम अपने हुनर को तराशते रहो क़ातिल
तुम्हारा नाम एक दिन उलू[8] पे आएगा।
[8]ऊँचे स्थान पर

शेख़ मयख़ाने का रस्ता नहीं भूला 'गौतम',
देख लेना यहाँ दौर-ए-सुबू[9] पे आएगा।
[9]शराब पीने के दौरान

58: मिले अगर तो दिखे जल्दी में

मिले अगर तो दिखे जल्दी में,
बात क्या होती जल्दी जल्दी में।

गए थे सुन के अयादत[1] के लिए,
मिला बिस्मिल[2] तो बहुत वज्दी[3] में।
[1]हाल-चाल पता करना [2]घायल [3]मोहावस्था

सलाम करके शुक्रिया कह दो,
बस तकल्लुफ़ ही है हमदर्दी में।

उसको घाटा हुआ उधारी में,
अब वो करता है सौदा नक़दी में।

हाथ मलते हुए मिला हरदम,
इतनी सर्दी नहीं थी सर्दी में।

अलविदा कह के उठे महफ़िल से,
लुत्फ़ आता है दश्त-गर्दी[4] में।
[4]जंगल में घूमना

लगाओ चोट पर इसको 'गौतम',
सिफत है ख़ास चूना-हल्दी में।

59: इतनी तारीफ़ के बाँधे गए पुल

इतनी तारीफ़ के बाँधे गए पुल,
हम हक़ीक़त को हो गए व्याकुल।

वक़्त नाज़ुक चमन पे आया है,
कितनी ख़ामोश हो गई बुलबुल।

लौटकर शाम को घर आना है,
सुब्ह-दम घर से जाइए बिल्कुल।

बात कुछ समझ में नहीं आती,
शहर में तारी है कैसा शोर-ग़ुल।

ढपोर शंख भी शर्मिंदा है,
लोग ऐसे बजा रहे हैं बिगुल।

उसके मन में भी है पशेमानी[1],
पता देने लगे उलझे काकुल[2]।
[1]पश्चाताप [2]घुंघराले बाल

नज़र 'गौतम' से मिलाते कैसे,
राज़ हर सामने जाएगा खुल।

60: घर के जलने पे गर देता हवा सगा होगा

घर के जलने पे गर देता हवा सगा[1] होगा,
तो घर के साथ साथ राब्ता[2] सुलगा होगा।
[1]रक्त संबंधी [2]रिश्ता

ज़बान खोलता नहीं है जो लुट जाने पर,
उसे बे-शक किसी अज़ीज़ ने ठगा होगा।

सुबह के वक़्त जो लेता है उबासी उठ के,
वो पीछे पीछे एक ख़्वाब के भगा होगा।

उसका चेहरा बता रहा है किसी अपने ने,
भरोसा जीतकर उसको दिया दगा होगा।

उसे पता नहीं कुछ भी किसी के बारे में,
सुबह से शाम तक वह काम में लगा होगा।

जहाँ खड़े हैं वहाँ पर घना अँधेरा है,
मगर यक़ीन है सूरज कहीं उगा होगा।

रिंद के साथ अगर बैठ गया तिश्ना-लब[3],
उसने साग़र को पिया आज डगडगा[4] होगा।
[3]प्यासा [4]दिल से

जिसके आने का भरोसा नहीं कोई 'गौतम',
क्यों उसके वास्ते हर रोज़ रतजगा होगा।

61: या-ख़ुदा याद किया है किसने

या-ख़ुदा याद किया है किसने,
ख़त हमें भेज दिया है किसने।

कोई मज़मून नहीं काग़ज़ पर,
मज़ाक़ हमसे किया है किसने।

तिश्ना-लब हूँ सवाल करता हूँ,
मेरे साग़र को पिया है किसने।

हमने इसकी नहीं नुमाइश की,
ज़ख़्म ये मेरा सिया है किसने।

सभी हैं अपनी सज़ा काट रहे,
उम्र को अपनी जिया है किसने।

चंद साये आज चौंकाने लगे,
जलाई शम-ए-ज़िया है किसने।

हमें बुला रहे सब सौदाई,
हमें यह नाम दिया है किसने।

बारहा आ रही हिचकी 'गौतम'
फिर मेरा नाम लिया है किसने।

62: ख़्वाब ना देते इन आँखों में किर्चियाँ देते

ख़्वाब ना देते इन आँखों में किर्चियाँ[1] देते,
मुँह तो ना फेरते मन होता झिड़कियाँ देते।
[1]कांच का महीन चूरा

कपाट बंद करके बैठना था सबको अगर,
बेवजह घर में लोग क्यों हैं खिड़कियाँ देते।

बुला रहे हैं आप हमको दौड़ने के लिए,
पहले चलने के लिए ही बैसाखियाँ देते।

बचा के आ गए मक़्तल से जो अपनी गर्दन,
ऐसे मक़्तूल को हम क्यों बधाईयाँ देते।

मान बैठे हैं हार कितने ही आलिम जिनसे,
हमें सुलझाने को क्यों हैं वो गुत्थियाँ देते।

जो नंगी पीठ पर ढोते रहे दिनभर सूरज,
उनको तुम पगड़ियाँ ना देते रोटियाँ देते।

जिसमें मिलता कहीं पे ज़िक्र हमारा 'गौतम',
कभी अख़बार में ऐसी भी सुर्ख़ियाँ देते।

63: बात बे-वजह किसलिए करते

बात बे-वजह किसलिए करते,
आपसे जिरह किसलिए करते।

जीत कर आप से हम हार गए,
जश्न-ए-फ़तह किसलिए करते।

हिज्र की रात कल भी आएगी,
जाग के सुबह किसलिए करते।

फिर वजह ढूँढ लेगा रंजिश की,
यार से सुलह किसलिए करते।

काम ना करने वाले कहते रहे,
काम इस तरह किसलिए करते।

तर्क-ए-वादा ही करना है जब,
कोई वादा वह किसलिए करते।

खोलना उसको गर होता 'गौतम',
गिरह पे गिरह किसलिए करते।

64: डराया शेख़ ने फिर ज़िक्र-ए-क़यामत से

डराया शेख़ ने फिर ज़िक्र-ए-क़यामत से,
मौत से पहले ही मर जाएं ना नदामत[1] से।
[1]लज्जा

यूँ तो इससे शिकायतें बहुत रहीं लेकिन,
ज़िंदगी होती नहीं कम किसी भी नेमत[2] से।
[2]उपहार

बात जब तक नहीं समझे रही आसानी कुछ,
मामले उलझ गए और दर्स-ए-हिकमत[3] से।
[3]ज्ञान का उपयोग

उसने आदत सितम सहने की ना डाली होती,
हम भी आराम से रहते ख़ुदा की रहमत से।

सामने देख कर उसको लोग कतराते हैं,
ख़ुद भी रहता है परेशान ख़ब्त-ए-अज़्मत[4] से।
[4]सम्मान के लिए पागल

अच्छी लगती नहीं है अब तो चकाचौंध हमें,
दोस्ती आँखों ने कर ली है ऐसी ज़ुल्मत[5] से।
[5]अँधेरा/कालिमा

हुई यह पहली बार बात नहीं है 'गौतम'
लोग होते कभी सहमत नहीं मेरे मत से।

65: इलाज शब के अँधेरे का कुछ किया जाए

इलाज शब के अँधेरे का कुछ किया जाए,
इस आफ़्ताब के फेरे का कुछ किया जाए।

सुबह से शाम तक जो पाँव चलते रहते हैं,
दिन ढले इनके बसेरे का कुछ किया जाए।

कू-ए-जानाँ में ऐरे-ग़ैरे बहुत आने लगे,
आने वाले ऐरे-ग़ैरे का कुछ किया जाए।

रात के जागे हुए थक के सो नहीं पाते,
जगाने वाले सवेरे का कुछ किया जाए।

साँप ख़ुद पालते हैं लोग आस्तीनों में,
आज तो खाली सपेरे का कुछ किया जाए।

लुटे लुटे से हैं बैठे लुटा के दिल अपना,
या-ख़ुदा दिल के लुटेरे का कुछ किया जाए।

साँस लेना भी अब दुश्वार हो गया 'गौतम',
शहर में कचरे के ढेरे का कुछ किया जाए।

66: ज़बाँ के साथ अगर दिल भी साफ़ रखते तो

ज़बाँ के साथ अगर दिल भी साफ़ रखते तो,
पेश-ए-बहस[1] मसाइल[2] भी साफ़ रखते तो।
[1]बहस के लिए [2]समस्या

कलाम सुनने कौन आया तेरी महफ़िल में,
तमाशबीनों से महफ़िल भी साफ़ रखते तो।

भटक भटक के रहगुज़र में उम्र क्यों जाती,
अगर निगाह में मंज़िल भी साफ़ रखते तो।

साफ़ पानी नहीं मिलता है आज दरिया से,
होती उम्मीद ये साहिल भी साफ़ रखते तो।

मेज़ पर धूल हो साहब को यह पसंद नहीं,
ठीक होता अगर फ़ाइल भी साफ़ रखते तो।

फ़ैसला क़ाज़ी[3] से मिलता गर माजरा सारा,
वकील और मुवक्किल भी साफ़ रखते तो।
[3]न्यायाधीश

जवाब के लिए इसरार क्यों करता ‘गौतम’,
सामने जान-ए-मुश्किल[4] भी साफ़ रखते तो।
[4]कठिनाई का कारण

67: दर्द-ए-दिल नहीं समझता संग-दिल है जो

दर्द-ए-दिल नहीं समझता संग-दिल[1] है जो,
काम की चीज नहीं मानता दिल-विल है जो।
[1]पत्थर दिल

मश्वरा[2] उसका है मिल लीजिए चारागर से,
बात दिल की नहीं समझता है बे-दिल[3] है जो।
[2]सुझाव [3]अनिच्छुक

तंग-दिल[4] घेर कर बैठे हैं आज महफ़िल को,
मुक़ाबला करेगा क्या फ़राख़-दिल[5] है जो।
[4]संकीर्ण ह्रदय [5]दरिया दिल

दलील-ओ-जिरह ने उलझाया मामला ऐसा,
फ़ैसला कर नहीं पाया कभी आदिल[6] है जो।
[6]न्यायाधीश

मेरी ख़ुद्दारी[7] इजाज़त नहीं देती मुझको,
गवाही देने को तैयार था क़ातिल है जो।
[7]स्वाभिमान

हमीं ने मुश्किलों को और कर दिया मुश्किल,
कोई मुश्किल नहीं थी ख़ास ये मुश्किल है जो।

जान देना बहुत आसान है लगता 'गौतम',
बात करना कठिन कहता रहा बुज़दिल है जो।

68: चंद आए हैं हरम से, चंद हैं बुत-ख़ाने से

चंद आए हैं हरम[1] से, चंद हैं बुत-ख़ाने[2] से,
आ गए दोनों निभाने राब्ता[3] मय-ख़ाने से।
[1]मस्जिद [2]मंदिर [3]रिश्ता

बस सुबह की बात है, देखे गए थे साथ में,
बाद मुद्दत लग रहा है मिल रहे पैमाने से।

मानते हैं आपने ख़ामोश उसको कर दिया,
जायेंगे दोबारा मिलने देखना फ़रज़ाने[4] से।
[4]विद्वान

पूछता सबसे है वो अपना ठिकाना-ओ-पता,
सब त'आरुफ़[5] पूछते हैं किसलिए दीवाने से।
[5]परिचय

एक आदत हो गई है शहर के हंगामे की,
जाने वाले लौट कर आ जायेंगे वीराने से।

साथ सब चलते रहे हैं भीड़ का हिस्सा बने,
रास्तों में पर मिला करते हैं सब बेगाने से।

नक़्श-ए-पा[6] छोड़े हैं 'गौतम' हमने याँ[7] आते हुए,
राज-पथ बन जायेगा लोगों के आने-जाने से।
[6]पाँव के निशाँ [7]यहाँ

69: यही हर रात की अब है कहानी

यही हर रात की अब है कहानी,
करी है नींद ने फिर आना-कानी।

बदलते हम रहे करवट पे करवट,
हुई कुछ देर से फिर मेहरबानी।

हम अक्सर बात वो भी काटते हैं,
जिसे हम माना करते हैं सयानी।

दम-ए-रुख़्सत[1] वही घबरा रहे हैं,
जो बोले ज़िंदगी आनी-ओ-फ़ानी[2]।
[1]विदाई *(मृत्यु)* [2]आने-जाने वाली

समझ पाए नहीं हम बात ऐसी,
निहाँ जिसमें रहे दो-दो म'आनी।

नहीं कुछ काम आएगा सफ़र में,
ये सब सामान होगा राएगानी[3]।
[3]व्यर्थ

बनाया एक घर उसने भी 'गौतम',
नहीं जो मानता ख़ुद को मकानी[4]।
[4]निवासी

70: क्यों कहें रहगुज़र मालूम नहीं

क्यों कहें रहगुज़र मालूम नहीं,
सफ़र कितना बचा मालूम नहीं।

क़दम चलते रहे सू-ए-मंज़िल,
कौन है रहनुमा, मालूम नहीं।

अलविदा तो नहीं कहा उसने,
क्या वो देगा दुआ, मालूम नहीं।

वहम को पाल रहे हैं दिल में,
कौन देगा सदा[1], मालूम नहीं।
[1]आवाज़

पलट के देखने से क्या होता,
कौन रोता रहा, मालूम नहीं।

नाम हमने भी ले लिया आख़िर,
ख़ुश हुआ गर ख़ुदा, मालूम नहीं।

नाम किसने तेरा लिया 'गौतम',
किसने पूछा पता मालूम नहीं।

71: मिलने आ जाता है वो शोख़ के हवाले से

मिलने आ जाता है वो शोख़ के हवाले[1] से,
ग़म ग़लत करता है रक़ीब मेरे प्याले से।
[1]सन्दर्भ

ज़हीन आदमी में हमने हुनर देखा यह,
क़द का अंदाज़ा लगा लेता है घोटाले से।

सच यही है कि सिर्फ डरता हूँ अँधेरों से,
मेरी परछाई तक डरती नहीं उजाले से।

कह रह था वो सबसे भूख से मर जायेगा,
ज़िंदा हो सकता है वो शख़्स दो निवाले से।

अजीब ज़िद्द है सहरा में कह रहा है वो,
सराब में कहीं सब्ज़े[2] मिलें हरियाले से।
[2]घास

तमाशा और कोई दूसरा दिखाओ हमें,
दिखा रहे हो जो जौहर[3] हैं देखे-भाले से।
[3]करामात/तमाशा

काम क्यों आती नहीं कोई भी दवा 'गौतम',
चारागर ग़ौर से अब देखे हमें आले से।

72: शाद किसने किया ख़ुदा जाने

शाद[1] किसने किया ख़ुदा जाने,
याद किसने किया ख़ुदा जाने।
[1]खुश

अज़ल से चल रहे तमाशों को,
आद[2] किसने किया ख़ुदा जाने।
[2]प्रारम्भ

मिला के मिट्टी में हस्ती मेरी,
खाद[3] किसने किया ख़ुदा जाने।
[3]उर्वरक

यहाँ पे बहता था पहले दरिया,
आँद[4] किसने किया ख़ुदा जाने।
[4]कीचड़

मिला यह केस हमें बिरसे में,
वाद[5] किसने किया ख़ुदा जाने।
[5]केस

तपिश सूरज की रखने वाले को,
चाँद किसने किया ख़ुदा जाने।

ख़्वाब धुँधला गए हैं आँखों में,
माँद[6] किसने किया ख़ुदा जाने।
[6]मध्यम/अस्पष्ट

अना के मारे हुए हैं 'गौतम',
ज़ाद[7] किसने किया ख़ुदा जाने।
[7]पैदा

73: नहीं कुछ काम की अस्ती हमारी

नहीं कुछ काम की अस्ती[1] हमारी,
फ़क़त है ख़ाक भर हस्ती हमारी।
[1]होना

शहर का जो पता बतला रहे हो,
वहाँ पर थी कभी बस्ती हमारी।

यहाँ है चल रहा सिक्का तुम्हारा,
यहाँ पर क्या ज़बरदस्ती हमारी।

फ़क़ीरों ने नहीं साग़र क़बूला,
कहा काफ़ी है सरमस्ती[2] हमारी।
[2]मौज

गए सब दौड़कर ख़ैरात लेने,
अना बनती रही सुस्ती हमारी।

अगर दिल चाहिए कहिए अदब से,
नहीं यह चीज़ है सस्ती हमारी।

यार पहचान में आए 'गौतम',
काम तो आई तंग-दस्ती[3] हमारी।
[3]आर्थिक तंगी

74: सबने हँसने की वजह पूछी है

सबने हँसने की वजह पूछी है,
कब तड़पने की वजह पूछी है।

छोड़कर चल दिए सभी आगे,
किसने रुकने की वजह पूछी है।

हाल दिल का नहीं पूछा हमसे,
बस धड़कने की वजह पूछी है।

तर्क-ए-वादा[1] पे सवाल नहीं,
वादा करने की वजह पूछी है।
[1]वादा तोड़ना

कू-ए-जानाँ[2] में बैठे लोगों से,
उसने धरने की वजह पूछी है।
[2]महबूब की गली

बाद मरने के मेरे अपनों ने,
मेरे मरने की वजह पूछी है।

सामने आ गई है मंज़िल तो,
पा[3] से थकने की वजह पूछी है।
[3]पैर

बात हो यार से कैसे 'गौतम',
बात करने की वजह पूछी है।

75: अज़ल से ये सफ़र मुसलसल है

अज़ल से ये सफ़र मुसलसल[1] है,
बशर को फ़िक्र-ए-मुसलसल[2] है।
[1]लगातार [2]शास्वत चिंता

फ़साना रोज़-ए-क़यामत का,
ये हक़ीक़त या एक अटकल है।

नहीं उम्मीद किसी दस्तक की,
यूँही लगता है बजी साँकल है।

सवाल बे-वजह करते क्यों हैं,
पास में आपके भी गूगल है।

शहर में तेरे लग रहा हमको,
हमारे चारों ओर जंगल है।

ख़याल से वो नहीं जाता है,
हुआ नज़र से सिर्फ ओझल है।

रात भर सो नहीं पाता 'गौतम'
और दिन में भी रहता बेकल[3] है।
[3]बेचैन

76: अगर आप कह दें, नफ़स छोड़ दें हम

अगर आप कह दें, नफ़स[1] छोड़ दें हम,
गली क्या शहर बिल-अकस[2] छोड़ दें हम।
[1]साँस/जीवन [2]इसकी जगह

कतर के अगर पंख वो पास रख लें,
अंदेशा-ए-क़ैद-ए-क़फ़स[3] छोड़ दें हम।
[3]पिंजरे में क़ैद की आशंका

बहुत कुछ है दिल में जो कहना है उससे,
इजाज़त मिले पेश-ओ-पस[4] छोड़ दें हम।
[4]झिझक

बहस करने से गर वो कतरा रहे हैं,
तो मुद्दा-ए-ज़ेर-ए-बहस[5] छोड़ दें हम।
[5]बहस के अंतर्गत विषय

नहीं कुछ बचा अब संभालें जिसे हम,
जो बाक़ी है वो ख़ार-ओ-ख़स[6] छोड़ दें हम।
[6]बेकार की वस्तुएं

दवा ना दुआ ना करें फ़िक्र-ए-मरहम,
मिले ज़ख़्म जो जस-का-तस छोड़ दें हम।

कटे एक लम्हा जो पहलू में 'गौतम',
तो बदले में बाक़ी बरस छोड़ दें हम।

77: हादसा अपने को दोहराएगा

हादसा अपने को दोहराएगा,
रात में ख़्वाब फिर जगाएगा।

अना-पसंद[1] सितमगर मेरा,
ख़ुशनसीबों पे सितम ढाएगा।
[1]धमंडी

शेख़ आदत नहीं बदलोगे तो,
रिंद मय-ख़ाने से भगाएगा।

आस्ताँ[2] पर जबीं रगड़ता है,
जब बुलाओगे चला आएगा।
[2]चौखट

आप गर हौसला बढ़ाएं तो,
बज़्म में बेसुरा भी गाएगा।

हाल यक-सा हुआ दीवानों का,
कौन नाला किसे सुनाएगा।

लाख कोशिश कोई करे 'गौतम',
रब जो चाहेगा वही पाएगा।

78: क़ैद की मीआ'द से ग़ाफ़िल रहे

क़ैद की मीआ'द[1] से ग़ाफ़िल रहे,
उम्र भर गुम-कर्दा-ए-मंज़िल[2] रहे।
[1]अवधि [2]लक्ष्य से भ्रमित

जाँच लेते सान[3] हैं शमशीर की,
मेहरबाँ मुझ पे मेरे क़ातिल रहे।
[3]धार/तेजी

जाना था ग़र्क़ाब[4] होने के लिए,
जाने वाले तालिब-ए-साहिल[5] रहे।
[4]डूबने [5]किनारे के आशिक/चाहने वाले

फिर मना सकते नहीं जश्न-ए-फ़तह,
गर ज़बाँ पे ज़िक्र-ए-मुश्किल रहे।

सबक़-ए-नादानी ने फ़ाज़िल[6] किया,
इश्क़ जो करते नहीं जाहिल रहे।
[6]ज्ञानी

देखकर जो चुप रहे कैसे कहें,
वो गुनाहों में नहीं शामिल रहे।

कम नहीं ये बात भी 'गौतम' अगर,
थोड़ा सबकी याद के क़ाबिल रहे।

79: सभी से हँस के मिल लिया करते

सभी से हँस के मिल लिया करते,
गिला ख़ुद से ही कर लिया करते।

किसी का नाम आ भी सकता था,
किसलिए ज़िक्र-ए-वाक़िया[1] करते।
[1]घटना की चर्चा

मेरी ख़्वाहिश थी डूब जाने की,
चश्म को झील या दरिया करते।

ख़ता की गर वो कैफ़ियत[2] लेते,
बोलने का नया ज़रिया करते।
[2]पूछ-ताछ

भूले बिसरों को दर्ज करने को,
सफ़्हों में छोड़ा हाशिया करते।

आपकी बात ध्यान से सुनते,
पेश अलहदा नज़रिया करते।

देख लेते मेरी जानिब 'गौतम',
ख़ुदा का हम भी शुक्रिया करते।

80: ख़्वाब गर अच्छे या बुरे होते

ख़्वाब गर अच्छे या बुरे होते,
संजो के आँख में धरे होते।

भरोसा ख़्वाब पर अगर होता,
ख़्वाब के रोज़ एक्सरे होते।

वक़्त की चारागरी के सदके,
वगरना ज़ख़्म सब हरे होते।

उतर गए जो मेरी आँखों से,
हमारे दिल से भी उतरे होते।

जवाब देते नहीं अच्छा है,
जवाब समझ से परे होते।

ख़िज़ाँ[1] की होती ना मेहरबानी,
शजर के पत्ते सब गिरे होते।
[1]पतझड़/सूखा मौसम

ख़बर ना आती तेरे आने की,
हम भी बैठे डरे डरे होते।

शर्त यह जोड़ने की है 'गौतम',
हाथ में अपने दो सिरे होते।

81: ढूँढता आब कौन है बे-तलब

ढूँढता आब कौन है बे-तलब[1],
पालता शौक़ कौन है बे-सबब[2]।

[1]बिना प्यास के [2]अकारण

जब तलक रहम ना हो साक़ी में,
जाम भरता नहीं मेरा लबालब।

ख़ासा एहसान है सितमगर का,
बे-वजह कहता कौन है या-रब।

अदब से अर्ज़ी लगा कर आएं,
वहाँ फ़ुर्सत से कौन है साहब।

सर-ब-ख़म[3] बैठ गया चौखट पर,
कुफ़्र-पेशा ये कौन है बुल-अजब[4]।

[3]सर झुकाए [4]अचम्भा

एक हँगामा हो गया फिर से,
कर रहा रोज़ कौन है ये ग़ज़ब।

क्या करेंगे ये जानकर 'गौतम',
आपसे मिलता कौन है, जब-तब।

82: रू हक़ीक़त बयाँ नहीं करता

रू[1] हक़ीक़त बयाँ नहीं करता,
आईना भी अयाँ[2] नहीं करता।
[1]चेहरा [2]प्रकट

दोस्त की दोस्ती पे शक होता,
अगर बुराइयाँ नहीं करता।

रू-ब-रू उससे क्या कहे कोई,
कभी सुनवाइयाँ नहीं करता।

देख लेता कभी मेरी जानिब,
खुली रुसवाइयाँ नहीं करता।

बंद दरवाज़ा किया ठीक किया,
बंद वो खिड़कियाँ नहीं करता।

हिजाब डाल के मुँह पर अपने,
ऐसी तारीकियाँ[3] नहीं करता।
[3]अँधेरे

दुआ-सलाम है करता 'गौतम',
सबसे नज़दीकियाँ नहीं करता।

83: भूली-बिसरी हुई कहानी कहते हैं

भूली-बिसरी हुई कहानी कहते हैं,
दोस्त मेरे इसको नादानी कहते हैं।

नाम किसी का आए अगर कहानी में,
इसको ही वाए-नादानी[1] कहते हैं।
[1]बेवकूफी

बिना बात के हँसते हैं हम रोते हैं,
हम इस हरकत को गर्दानी[2] कहते हैं।
[2]अभ्यास

अरमानों को कुचला मेरे क़ातिल ने,
ऐसे मसलों को दीवानी[3] कहते हैं।
[3]सिविल केस

लुट कर जिनसे गिला नहीं करता कोई,
उस अज़ीज़ को लोग अदानी[4] कहते हैं।
[4]अति निकट

नहीं शेख़ से दिल की बात कही जाती,
सबसे वो बातें यज़्दानी[5] कहते हैं।
[5]अलौकिक

मौके पर ख़ामोश ज़बान हुई 'गौतम',
इसको ही सब सरगरदानी[6] कहते हैं।
[6]उद्विग्नता

84: रात भर बदलते रहे करवट

रात भर बदलते रहे करवट,
कहाँ कहाँ चले गए सरपट।

चाहते थे नहीं सुनना लेकिन,
ख़याल करते ही रहे खटपट[1]।
[1]शोर

ख़ास है इंतिज़ाम सबके लिए,
आख़िरी सफ़र कीजिए बे-टिकट।

साथ साया भी नहीं होता है,
सफ़र ये रात का होता है विकट।

वस्ल इसको नहीं कह सकते हैं,
हिज्र की रात था ख़याल निकट।

निकल के आए साए माज़ी से,
रहा तन्हाई पे हरदम संकट।

जगा जगा के सुलाते ही रहे,
ख़्वाब तो होते हैं 'गौतम' नटखट।

85: सफ़र शब का है मुसीबत वाला

सफ़र शब का है मुसीबत वाला,
हर एक लम्हा है दिक़्क़त वाला।

मेरा सवाल है दुनिया से जुड़ा,
जवाब उसका है हैअत[1] वाला।
[1]अलौकिक दुनिया का

ख़याल-ए-वस्ल[2] से परेशाँ हो,
वक़्त होगा कठिन फ़ुर्क़त[3] वाला।
[2]मिलन का विचार [3]वियोग

दोस्त हमदर्द अच्छे लगते हैं
हो ना अंदाज़ नसीहत वाला।

मनाना रूठे हुए दिलबर को,
काम होता है मशक़्क़त वाला।

सितम से कोई परेशानी नहीं,
अता लम्हा हो फ़राग़त[4] वाला।
[4]आराम का

इश्क़ आसान नहीं है 'गौतम',
आदमी चाहिए जुरअत[5] वाला।
[5]साहसी

86: सुकूत-ए-शाम जाँ पे भारी है

सुकूत-ए-शाम[1] जाँ पे भारी है,
शाम के बाद शब की बारी है।
[1]शाम की चुप्पी

दिन गुज़ारा गया सिसकते हुए,
जिस्म में रूह थकी-हारी है।

परेशानी है जितनी चेहरे पर,
दोस्ती उतनी इश्तिहारी[2] है।
[2]नुमाइशी

फूल फेंके गए हैं मैय्यत पर,
ये किस तरह की संगसारी[3] है।
[3]पत्थर फेंकना

यार नाराज़ है यक़ीनन फिर,
इसमें कोई ख़ता हमारी है।

जीत कर भी तो हारना था हमें,
जान कर हमने बाजी हारी है।

सहर[4] की फ़िक्र अभी से 'गौतम',
अभी तो बाक़ी रात सारी है।
[4]सवेरा

87: संग हाथों में उठाए बढ़े मेरी जानिब

संग हाथों में उठाए बढ़े मेरी जानिब,
तमाम सम्त[1] से साए बढ़े मेरी जानिब।

[1]दिशा

जाने किस बात पर नाराज़ दोस्त हैं मेरे,
आज सब बाँह चढ़ाए बढ़े मेरी जानिब।

दलील बात बात पर नहीं देनी थी हमें,
लोग उम्मीद लगाए बढ़े मेरी जानिब।

हमीं नहीं थे बेकरार उससे मिलने को,
निगाह वो भी झुकाए बढ़े मेरी जानिब।

मेरे मरने की ख़बर का ये असर देखा है,
हाथ सीने से सटाए बढ़े मेरी जानिब।

ये ज़रूरी तो नहीं था मगर क़ातिल मेरे,
अपने चेहरे को छुपाए बढ़े मेरी जानिब।

किसी ने उसके साथ नाम ले लिया मेरा,
अपने तेवर वो चढ़ाए बढ़े मेरी जानिब।

सामने पड़ने पर करते हैं एहतिराम मेरा,
नज़र किसी पे गड़ाए बढ़े मेरी जानिब।

शेख़ से हमने कुछ सवाल कर दिए 'गौतम',
ख़िलाफ़ भीड़ जुटाए बढ़े मेरी जानिब।

88: जहाँ मिले बहस-आमादा मिले

जहाँ मिले बहस-आमादा[1] मिले,
दोस्त नाराज़ बहुत ज़्यादा मिले।
[1]विवाद को तैयार

हम रक़ीबों से गले मिल लेते,
तेरी गली में सब आज़ादा[2] मिले।
[2]निरंकुश

रहे ता-उम्र चस्पाँ नज़रों से,
ख़्वाब कुछ ऐसे ख़्वाब-ज़ादा[3] मिले।
[3]सपनों से उपजे

हमने विर्से[4] में कुछ नहीं पाया,
मिज़ाज ही नवाब-ज़ादा मिले।
[4]विरासत

अपनी मंज़िल तलाश करते हुए,
कई हम-राह सर-ए-जादा[5] मिले।
[5]रास्ते के प्रारम्भ से

मुफ़लिसी[6] ने यूँ शर्मसार किया,
दुआ दी यार को शहज़ादा मिले।
[6]दरिद्रता

जब परेशाँ हुए तन्हाई से,
यूँही हम सबसे बे-इरादा मिले।

गुफ़्तगू में मज़ा तब आता है,
ज़बाँ पे सिर्फ़ हर्फ़-ए-सादा[7] मिले।
[7]सीधी सीधी बात

मेहरबाँ दोस्त मिल गए 'गौतम',
किसलिए चाहते हम आदा[8] मिले।
[8]दुश्मन

89: नहीं पलट के फिर अगर देखा

नहीं पलट के फिर अगर देखा,
परेशाँ हमने फ़ित्ना-गर[1] देखा।
[1]उपद्रवी

उसने क्या देखा शेख़ बतलाए,
हमने जो देखा वो दीगर[2] देखा।
[2]भिन्न

ग़ौर से सबने है देखी सूरत,
किसी ने कब मेरा जिगर[3] देखा।
[3]साहस

बात कोई थी बाइस-ए-हैरत[4],
दिल नहीं था हमें मगर देखा।
[4]हैरानी का कारण

बात कोई छुपा रहा था वह,
उसको कहते अगर-मगर देखा।

सबने लोगों की तिश्नगी[5] देखी,
हमने घबराया फ़स्लगर[6] देखा।
[5]प्यास [6]किसान

मुतमइन[7] ख़ुद से है नहीं 'गौतम'
आईना रू-ब-रू रखकर देखा।
[7]संतुष्टि

90: हवा के सामने चराग़ मेरा

हवा के सामने चराग़ मेरा,
चाहता ओट है चराग़ मेरा।

छेड़ते हम भी हैं अगर लौ को,
जलाता हाथ है चराग़ मेरा।

रोज़ परवानों के लिए जलकर,
होम हो जाता है चराग़ मेरा।

सारा दिन इंतिज़ार करता है,
जब हुई शब जला चराग़ मेरा।

शोख़ आँखों से नहीं करता है,
मुक़ाबला कभी चराग़ मेरा।

जलता बुझता रहा ताउम्र यूँही,
वक़्त के साथ ये चराग़ मेरा।

ख़त्म अब तेल हो रहा 'गौतम',
भड़कता देखिए चराग़ मेरा।

91: सवाल दर सवाल क्या करते

सवाल दर सवाल क्या करते,
सवाल था, सवाल क्या करते।

कैफ़ियत दे रही सूरत मेरी,
जनाब अर्ज़-ए-हाल क्या करते।

नज़र मिला नहीं जो पाते हैं,
कोई ज़िक्र-ए-मलाल क्या करते।

जान जिसपर लुटाए बैठे हैं,
उसका जीना मुहाल क्या करते।

नक़ाब उलट दिया है उसने,
इससे ज़्यादा मजाल क्या करते।

संभाल पा नहीं रहे ख़ुद को,
किसी की देख-भाल क्या करते।

आप बिल-मिस्ल[1] हो गया 'गौतम',
पेश कोई मिसाल क्या करते।

[1]एक उदाहरण

92: लब-ए-दरिया खड़े रहे बेकल

लब-ए-दरिया[1] खड़े रहे बेकल[2],
बैठे-ठाले लगा रहे अटकल।
[1]नदी के किनारे [2]बेचैन

किसी ने संग[3] उछाला होगा,
लगा पानी में हो रही हलचल।
[3]पत्थर

मा'नी[4] हमने गलत निकाला था,
कल का मा'नी बता रहे हैं कल।
[4]अर्थ

लोग फ़ुर्सत से तो दिखाई दें,
बात करने की हम करेंगे पहल।

सख़्त है ए'तराज़ लैला को,
इश्क़ में ना करें मजनूँ की नक़ल।

लोग हमको सुनाया करते हैं,
मेरे अफ़साने को उन्वान[5] बदल।
[5]शीर्षक

ख़ुदा जाने कहाँ गया 'गौतम',
रंज-बर[6] बज़्म से गया था निकल।
[6]दुखी होकर

93: ख़्वाब था रात भर सबने देखा

ख़्वाब था रात भर सबने देखा,
सुबह अख़बार में किसने देखा।

ध्यान अफ़वाह पर नहीं देंगे,
वही मानेंगे जो हमने देखा।

रोज़ सूरत पे बहस करता है,
पस-ए-नक़ाब[1] ही जिसने देखा।
[1]परदे के पीछे

बात हमसे छुपा रहे हैं पर,
किसी ने जो किया रब ने देखा।

अलविदा कह के जा रहे थे तो,
पलट के किसलिए उसने देखा।

शेख़ से पूछा है शैदाई[2] ने,
क्या मेरे यार को तुमने देखा।
[2]दीवाना

तमाशबीन हैं बहुत 'गौतम',
हादसा आँख से किसने देखा।

94: ये ज़िंदगी का सफ़र भी कितना अजीब है

ये ज़िंदगी का सफ़र भी कितना अजीब है,
ठिठके हैं सबके पाँव जब मंज़िल क़रीब है।

सबकी ये गुज़ारिश है न बर्ख़ास्त बज़्म हो,
हर बशर की ज़बान पे लफ़्ज़-ओ-तरकीब[1] है।
[1]शब्द (प्रार्थना) और उपाय

करते हैं दोनों गुफ़्तगू हिज्र-ओ-विसाल पर,
दिल को है वह अज़ीज़ अगरचे रक़ीब है।

चलने की बात करता रहा बात-बात पर,
तैयार नहीं वो यह अजीब-ओ-ग़रीब है।

मरने की दुआ देता रहा जो हमें हरदम,
मय्यत के साथ देखिए वो बा-तहज़ीब है।

उम्मीद थी कुछ दिल की बात दोस्त कहेंगे,
समझा रहे हैं जो वो कलाम-ए-ख़तीब[2] है।
[2]धर्म प्रचारक की बातें

आँखों से हो रहा है अयाँ[3] आपकी 'गौतम',
दिल में अभी निहाँ कोई बाक़ी तरग़ीब[4] है।
[3]प्रकट [4]अभिलाषा

95: यूँही हर सम्त नज़र दौड़ाई

यूँही हर सम्त[1] नज़र दौड़ाई,
कोई सूरत नहीं नज़र आई।
[1]दिशा/ओर

कोई अंदाज़ा नहीं था हमको,
इतनी मनहूस होगी तन्हाई।

ध्यान से बात थी सुनी हमने,
अक़्ल में बात देर से आई।

दो हैं किरदार हर कहानी में,
एक सौदाई एक हरजाई।

सिलसिला गुफ़्तगू का टूट गया,
वस्ल की शब ली गई अँगड़ाई।

पूरा हो पाया नहीं शौक़-ए-सफ़र,
इधर कुआँ था उधर थी खाई।

गिला कभी नहीं किया हमने,
ज़िंदगी पर वफ़ा से बाज़ आई।

96: बात मेरी कभी नहीं करते

बात मेरी कभी नहीं करते,
बात पूरी कभी नहीं करते।

बात होती अगर सीधी-सादी,
लफ़्ज़ चोरी कभी नहीं करते।

काम करने की सोचने वाले,
बात कोरी कभी नहीं करते।

ख़याल सबका करने वाले तो,
मेरी तेरी कभी नहीं करते।

जो कहे हँस के शुक्रिया रब को,
हेरा-फेरी कभी नहीं करते।

चाहते दिल से आप आना तो,
आप देरी कभी नहीं करते।

ख़ुदा का नाम ले रहे हैं जो,
शिर्क-ए-ग़ैरी[1] कभी नहीं करते।
[1]किसी और ईश्वर की बात

भीड़ के साथ चल रहे हैं जो,
वो दिलेरी कभी नहीं करते।

यही उसे है शिकायत 'गौतम',
जी-हुज़ूरी कभी नहीं करते।

97: याद वो आए तो आफ़त आई

याद वो आए तो आफ़त आई,
आज फ़ुर्सत से थे शामत आई।

आते जाते दुआ-सलाम हुई,
इसी बहाने से राहत आई।

क़सीदा[1] पढ़ने से इंकार किया,
तो मेरे हिस्से में क़िरअत[2] आई।
[1]प्रशंसा में काव्य पाठन [2]कुरआन का पाठ

सज्दा करने हरम में जाने लगे,
इश्क़ में हमको अक़ीदत[3] आई।
[3]स्तुति/पूजा का ढंग

यार की बात चली महफ़िल में,
कभी वहशत कभी दहशत आई।

हौसला धीरे धीरे खुलता गया,
अर्ज़ करने की भी जुरअत[4] आई।
[4]साहस

ख़फ़ा ख़फ़ा हैं आज 'गौतम' से,
फिर शिकायत है पेशतर[5] आई।
[5]सामने

98: लोगों के मशवरे सुनें या दिल के मशवरे

लोगों के मशवरे[1] सुनें या दिल के मशवरे,
कुछ ने सुनाए क़िस्से हैं, कुछ ने मुहावरे।
[1]सुझाव

कुछ दोस्त नाला[2] करने लगे साथ बैठकर,
कुछ दोस्त साथ बैठ गए बन के मस्ख़रे।
[2]विलाप

कुछ नागवार हमने उसे कह दिया शायद,
अब शेख़ बुलाने लगे हर दिन मुज़ाकरे[3]।
[3]सभा/गोष्ठी

करने लगा है इश्क़ अब चारागरी[4] शायद,
आशिक़ दिखाई दे रहे हैं हमको छरहरे।
[4]इलाज

क्या सोचकर हँसते हुए कहता है यायावर,
सब घर के नाम पर बना रहे हैं कटघरे।

सोने को दी ज़मीन ओढ़ने को आसमान,
अल्लाह से फिर भी ख़फ़ा रहेंगे ना-शुकरे[5]।
[5]अनुग्रह न मानने वाले

क्या बात है तुमसे ही ख़फ़ा हो गए 'गौतम',
तुम भी उठा रहे थे उनके नाज़-ओ-नख़रे।

99: ज़बाँ पे लफ़्ज़-ए-सदाक़त है

ज़बाँ पे लफ़्ज़-ए-सदाक़त[1] है,
बात करने में यही दिक़्क़त है।
*1*सत्य बात

बात जन्नत की और हूरों की,
महज़ ख़याल या हक़ीक़त है।

शेख़ की बातों से लगा सबको,
नज़र से दूर एक ख़िल्क़त[2] है।
*2*श्रृष्टि

इश्क़ में यार से गिला करना,
ये नहीं इश्क़ ये हिमाक़त है।

सुर्ख़रू होता है वही जिसमें,
गुफ़्तगू करने की लियाक़त[3] है।
*3*योग्यता

संभल संभल के लोग मिलते हैं,
नहीं आसान अब रिफ़ाकत[4] है।
*4*दोस्ती

मुश्किलें होती हैं फ़तह 'गौतम',
साथ गर दस्त-ए-मशक़्क़त[5] है।
*5*मेहनती हाथ

100: ख़ुश-नुमा ख़्वाब भींच लेते हैं

ख़ुश-नुमा ख़्वाब भींच लेते हैं,
ज़ोर से आँख मीच लेते हैं।

भार उठता नहीं उठाए तो,
चश्म आँसू उलीच लेते हैं।

अब तो एहसान अपने यारों के,
समझ के ऊँच-नीच लेते हैं।

नज़र के तीर अगर आते हैं,
जिगर के बीचों-बीच लेते हैं।

फूल से दुश्मनी नहीं कोई,
किंतु ख़ारों को सींच लेते हैं।

मेरे क़ातिल ने धो लिया ख़ंजर,
हम भी दामन को फींच लेते हैं।

कल की तस्वीर सोचकर 'गौतम',
हवा में नक़्शे खींच लेते हैं।

101: भटक रहे हैं क्या ख़ुद को तलाश पाएंगे

भटक रहे हैं क्या ख़ुद को तलाश पाएंगे,
नहीं मिले अगर किसको तलाश पाएंगे।

ध्यान से सुनते नहीं बात हम जो कहते हैं,
बात का मेरी क्या मतलब तलाश पाएंगे।

बग़ल से गुज़र गए वो बिना पहचाने हुए,
भीड़ में हमको किस तरह तलाश पाएंगे।

मिलने वालों से मेरी खोज-ख़बर लेते हैं,
घर से जब निकलेंगे तो ही तलाश पाएंगे।

शेख़ की बात पर होता नहीं यक़ीन हमें,
जाम जो छोड़ें वो रब को तलाश पाएंगे।

उड़ती उड़ती निगाह डालने से क्या होगा,
ग़ौर से सबको देखकर तलाश पाएंगे।

तलाशने में जिसे उम्र चुक गई 'गौतम',
उसे तो दिल में उतरकर तलाश पाएंगे।

102: बात करने से किसी को भी है गुरेज़ नहीं

बात करने से किसी को भी है गुरेज़[1] नहीं,
बात इतनी सी है कोई बला-अंगेज़[2] नहीं।
[1]आपत्ति [2]मुसीबत का चाहने वाला

निज़ाम का है काम तो निज़ाम ही जाने,
जगाना नींद से किसी को है जाएज़ नहीं।

यहाँ जो होता है होता है रब की मर्ज़ी से,
ग़लत को करना सही मेरा फ़राएज़[3] नहीं।
[3]कर्त्तव्य/काम

छपी अख़बार में है तो ख़बर यक़ीनन है,
बहस की बात है ख़बर सनसनी-खेज़ नहीं।

शहर से तेरे नहीं होती है हैरत अब तो,
कोई भी हादसा होता है यास-खेज़[4] नहीं।
[4]दुखी करने वाला

बहस बे-शग़ल सही उसमें क्या मज़ा होगा,
देखने में अगर आता हो तुर्श-ओ-तेज़[5] नहीं।
[5]कड़ुवाहट

ज़बान मेरी समझता नहीं कोई 'गौतम'
अगरचे बज़्म में कोई भी है अंग्रेज़ नहीं।

103: फिर जाते जाते यार ने देखा है घूम कर

फिर जाते जाते यार ने देखा है घूम कर,
होठों से कुछ कहा है उँगलियों को चूम कर।

हैरत-ज़दा लोगों ने भी देखा वो माजरा,
उस पीर[1] नुजूमी[2] की नज़र थी नुजूम[3] पर।
[1]वृद्ध *(अनुभवी)* [2]ज्योतिषी [3]सितारों पर *(ग्रहों की स्थिति)*

नाला अगर करने से कुछ मिलता सुकून है,
तो जाके उसके कूचे में दिल-ए-महरूम कर।

उम्मीद चारागर से लगाने लगे बिस्मिल,
ज़ख़्मों का जाएज़ा लिया है घूम घूम कर।

कब फोड़ता है भाड़ अकेला चना कहिए,
हंगामा अगर करना है लेकर हुजूम कर।

जाता नहीं है ध्यान किसी पर भी बे-वजह,
साँसों से अपनी पैदा बाद-ए-सुमूम[4] कर।
[4]रेगिस्तानी गर्म हवा

गर जानना है यारों का याराना तो 'गौतम',
बेहतर ये होगा अपने आप को मरहूम कर।

104: तमाम शब दहर को रोते रहे

तमाम शब दहर[1] को रोते रहे,
जागे जागे सहर[2] को रोते रहे।
*1*दुनिया *2*सवेरा

रास्ते सिर्फ मिले बे-मंज़िल,
आबला-पा[3] सफ़र को रोते रहे।
*3*जिनके पैर में छाले हैं

पहले रोए थे कम-नज़र[4] के लिए,
बाद में हम-नज़र[5] को रोते रहे।
*4*कम दृष्टि *(समझ) 5*समान दृष्टिकोण

सबने मरने की दुआ दी लेकिन,
हम दुआ में असर को रोते रहे।

आपके साथ थे सितारे नहीं,
आप शम्स-ओ-क़मर[6] को रोते रहे।
*6*सूर्य-चंद्रमा

पहले काटे थे हाथ से सबने,
बाद में सब शजर[7] को रोते रहे।
*7*पेड़

रोने वाला नहीं मिला 'गौतम',
लोग लख़्त-ए-जिगर[8] को रोते रहे।
*8*दिल का टुकड़ा *(पुत्र)*

105: लम्हे गिन-गिन के दिन गुज़ारे गए

लम्हे गिन-गिन के दिन गुज़ारे गए,
याद कर-कर के दिन गुज़ारे गए।

लगा के कान को दरवाज़े पर,
यूँही सब हफ़्ते-दिन गुज़ारे गए।

कोई आता नहीं मिलने के लिए,
माह[1] यारों के बिन गुज़ारे गए।
[1]महीना

जैसे गुज़रे हैं साल-ओ-सिन[2] पहले,
बाक़ी के साल-ओ-सिन गुज़ारे गए।
[2]वर्ष और उम्र

ज़ख़्म क्यों टीसते नहीं अपने,
परख के पिन से दिन गुज़ारे गए।

किताब-ए-माज़ी के सफ़्हे अक्सर,
उलट-पलट के दिन गुज़ारे गए।

वही काटे नहीं कटे 'गौतम'
लम्हे जो सबके बिन गुज़ारे गए।

106: रफ़्ता रफ़्ता उम्र घटती जा रही

रफ़्ता रफ़्ता उम्र घटती जा रही,
मैली चादर रोज़ फटती जा रही।

भीड़ में कैसे उसे पहचानते,
ध्यान से पहचान छटती जा रही।

अक्स से कोई लगावट ही नहीं,
आईने पर गर्द अटती जा रही।

कौन सा टुकड़ा है मेरे नाम का,
ज़िंदगी टुकड़ों में बटती जा रही।

एक भी मंज़र नहीं है साफ़ क्यों,
धुंध आँखों में सिमटती जा रही।

ठहरती देखी नहीं उँगली कभी,
माज़ी के सफ़्हे उलटती जा रही।

खींच कर ले जा रही है ज़िंदगी,
पीछे ये किसके झपटती जा रही।

क्या गिला 'गौतम' बचा दिल में रहा,
ज़बाँ किसका नाम रटती जा रही।

107: जानते-बूझते चुप-चाप रहे

जानते-बूझते चुप-चाप रहे,
बोलने का असर हैं नाप रहे।

आज बैठेगा कौन सी करवट,
मिज़ाज ऊँट का हैं भाप रहे।

सफ़्हे भर डाले इश्तहारों से,
कैसे अख़बार रोज़ छाप रहे।

ग़ैर का इंतिख़ाब[1] कैसे करें,
जहाँ उम्मीदवार आप रहे।
[1]चयन/चुनाव

दिल दुखाते नहीं किसी का भी,
सबसे करते भरत-मिलाप रहे।

रंग में बज़्म नहीं आ सकती,
सभी हैं अपने सुर अलाप रहे।

बला की सर्दी हो रही 'गौतम',
जला के बस्ती लोग ताप रहे।

108: ज़रख़ेज़ ज़मीं हो तो फिर सब्ज़े भी खिलेंगे

ज़रख़ेज़[1] ज़मीं हो तो फिर सब्ज़े भी खिलेंगे,
दिल में हमारे यादों के कुछ गुल भी खिलेंगे।
[1]उर्वर

वादा वफ़ा कर देंगे यह उम्मीद है किसको,
वादा मगर कर देंगे तो चेहरे भी खिलेंगे।

इंसान अगर चाहे तो हर बात है मुमकिन,
बस इब्तिदा कर दीजिए जंगल भी खिलेंगे।

बेकार नहीं जाता है आशिक़ का लहू है,
कुछ छींटे हों दामन पे तो दामन भी खिलेंगे।

आ जाओ बे-नक़ाब एक दिन तो बज़्म में,
हंगामा भी बरपेगा और ग़ुल भी खिलेंगे।

बादल बहर से उठ के गर आ जाएंगे 'गौतम',
जलते हुए कोहसार[2] में चश्मे[3] भी खिलेंगे।
[2]पर्वत माला [3]पानी के झरने

109: किसी के साथ हमारा मिज़ाज मिलता नहीं

किसी के साथ हमारा मिज़ाज मिलता नहीं,
इसी वजह से हमें राज-काज मिलता नहीं।

समझना चाहा जिसने काम की ज़रूरत को,
उसे दोबारा कोई काम-काज मिलता नहीं।

मीर[1] महफ़िल के थे तो लोग मिला करते थे,
हमारा आश्ना[2] तक हमसे आज मिलता नहीं।
*1*प्रमुख *2*निछावर

मरीज-ए-इश्क़ को समझा रहा है चारागर,
लगा जो रोग है इसका इलाज मिलता नहीं।

तख़्त को ठोकरें मारो तो तख़्ता[3] मिलता है,
ऐसे दीवाने के सर को है ताज मिलता नहीं।
3 फांसी घर का पटरा *(सज़ा)*

गिनाए ऐब जो उसको क़रीब रखने की,
नसीहतें तो मिल रहीं रिवाज मिलता नहीं।

सभी को बोलने का हक़ तो मिल गया 'गौतम',
बोल सकते हों सब ऐसा समाज मिलता नहीं।

110: है सख़्त एतिराज़ सभी को सवाल पर

है सख़्त एतिराज़[1] सभी को सवाल पर,
ये इब्तिदा-ए-बहस[2] न पहुँचे बवाल[3] पर।
[1]आपत्ति [2]बहस का प्रारंभ [3]झगड़ा

बैठे हुए हैं लोग यहाँ पर अमन-पसंद,
नाराज़ हो भी सकते हैं ख़ूँ के उबाल पर।

बैठे हुए उम्मीद से हैं कितने तिश्ना-लब[4],
तलछट[5] हिलाइये नहीं पानी खँगाल[6] कर।
[4]प्यासे [5]पानी की तह में जमा कीचड़ [6]हिलाना

देखा नहीं जाता है गर मलाल किसी का,
तो बैठकर तन्हाई में इसका मलाल कर।

लौटाते हुए दिल मेरा ताकीद की गई,
बेकार की है चीज पर रखिए संभाल कर।

पा को घसीटते हुए लौटी ये भीड़ है,
ज़ाहिर है आ रही है ये पत्थर उछाल कर।

सबको था इंतिज़ार क़सीदे[7] का आपसे,
'गौतम' कलेजा रख दिया कैसे निकाल कर।
[7]तारीफ़ की कविता